अमृत विचार

लोक दर्पण

रविवार, 23 जून 2024 | www.amritvichar.com

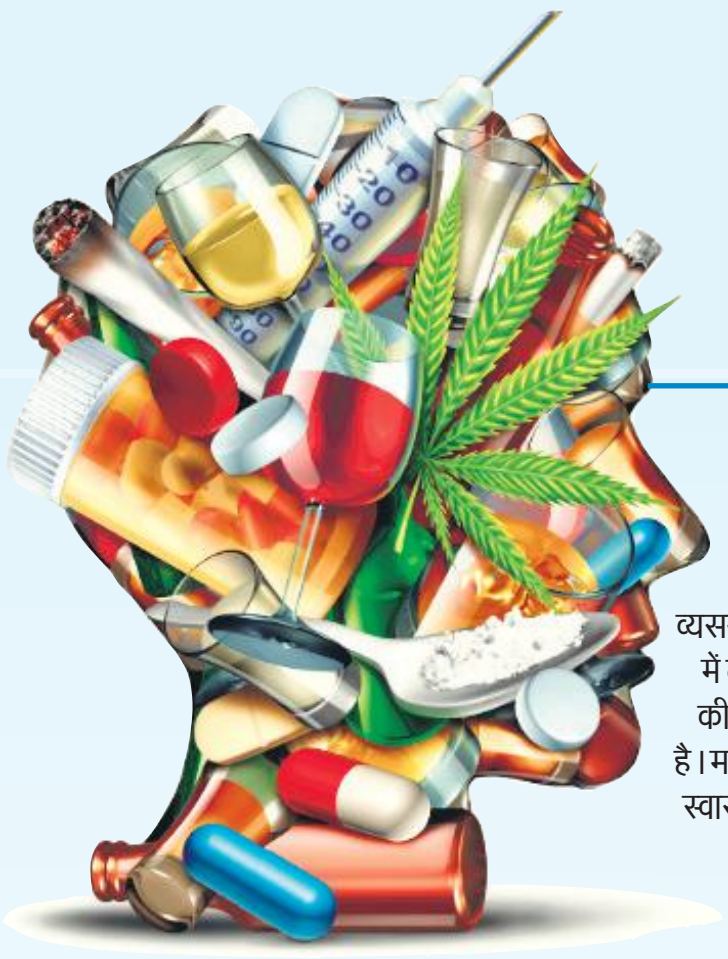

दुनिया का कोई भी देश और हिस्सा मादक द्रव्यों की व्यापकता, उनकी लत एवं उसके दुष्परिणामों के अभिशाप से मुक्त नहीं है। नशीली दवाइयों का व्यसन एक गंभीर चिंता का विषय बन गया है। इससे देश की आबादी के स्वास्थ्य तथा उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थितियों पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। समाज के अनेक वर्गों के लोगों में इसकी व्यापक पैठ है। भारत की युवा पीढ़ी में नशीली दवाइयों के व्यसन की महामारी ने भयावह रूप धारण कर लिया है। आधुनिक जीवन के दबाव एवं तनाव भरी आपा-धापी में लोग बड़ी आसानी से नशीली दवाइयों की लत का शिकार बन रहे हैं। अल्कोहल अथवा नशीली दवाइयों की लत से न केवल एक व्यक्ति प्रभावित होता है, बल्कि परिवार और समाज भी गंभीर रूप से प्रभावित होता है। मादक द्रव्यों के व्यसन से उत्पन्न विकार मानसिक स्वास्थ्य, सुरक्षा और कल्याण के संदर्भ में व्यक्तियों के स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव डाल रहे हैं। इनकी लत का शिकार हुए व्यक्तियों पर लगे धब्बे और उनके प्रति भेदभाव के कारण आवश्यकता पड़ने पर भी लोग उनकी मदद के लिए सामने नहीं आते।

गंभीर समस्या है

नशीली दवाइयों का व्यसन

जागरूकता और सहयोग

संयुक्त राष्ट्र के ऑफिस ऑन ड्रग्स एंड क्राइम के द्वारा दुनिया में मादक दवाइयों के व्यसन और उनके अवैध तस्करी के विरुद्ध लोगों में जागरूकता फैलाने तथा विश्व को मादक द्रव्य व्यसन से मुक्त करने में सफलता प्राप्त करने की दिशा में कार्यवाही और पारस्परिक सहयोग को मजबूत बनाने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 26 जून को "अंतर्राष्ट्रीय मादक द्रव्य एवं अवैध तस्करी निषेध दिवस" के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर जन सामान्य में प्रभावी जागरूकता फैलाने के लिए प्रत्येक वर्ष एक निश्चित थीम पर आधारित कार्यक्रमों का आयोजन सुनिश्चित किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 2024 के इस महत्वपूर्ण दिवस के लिए निर्धारित थीम है: "प्रमाण स्पष्ट है: निवारण में निवेश करें"। इस वर्ष के लिए निर्धारित थीम के अंतर्गत विज्ञान, अनुसंधान, मानवाधिकार को सम्मान, करुणा जैसे क्षेत्रों में कारगर औषधि नीतियों को तैयार करने तथा नशीली दवाइयों के सेवन से समाज, स्वास्थ्य तथा आर्थिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभावों को ज्ञात करने का उद्देश्य निर्धारित किया गया है। कुछ महत्वपूर्ण उद्देश्यों में निम्नलिखित शामिल है:

जागरूकता फैलाएं : प्रमाण आधारित निवारण नीतियों की प्रभावकारिता और पड़ने वाले आर्थिक भार के विषय में जानकारी बढ़ाना।

निवेश का समर्थन करें : सरकारों, नीति निर्माताओं और कानून अनुपालन कराने के लिए जिम्मेदार व्यक्तियों द्वारा नशीली दावाओं के निवारण और उस पर शुरुआती कार्यवाही पर जोर देते हुए निवारण प्रयासों में अधिक से अधिक निवेश को बढ़ावा देना।

वार्ता और सहयोग को सुगम बनाना : मादक द्रव्यों के व्यसन और इसकी तस्करी के विरुद्ध कार्य करने वाली एजेंसियों के बीच पारस्परिक निवारण गतिविधियों एवं नीतियों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देना।

युवाओं को सशक्त बनाना : समुदाय में परिवर्तन लाने, औषध निवारण से जुड़े कार्यों को समर्थन देने तथा इस विषय पर बातचीत के दौरान सामाजिक भागीदारी को महत्व देने के लिए युवाओं को शिक्षित करने, उनके ज्ञान एवं कौशल को बढ़ावा देने और आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था करना।

नशीली दवाइयों की तस्करी पर नियंत्रण

नशीली दवाइयों की तस्करी पर शुरुआती नियंत्रण महत्वपूर्ण है और भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों के पारस्परिक समन्वयन में समुदाय के लोगों विशेष सत्य युवाओं और महिलाओं को नशीली दवाइयां के गिरफ्त में आने से बचने के लिए उनकी शिक्षा पर पर्याप्त निवेश करने के साथ-साथ उन्हें विशेषतया युवाओं को स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक सूचनाएं प्रदान करने जैसे आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं। इनसे संबंधित नियमों और कानूनों के अनुपालन की दिशा में भी कारगर प्रयास जारी हैं। इस लेख में मादक द्रव्य व्यसनियों द्वारा प्रयुक्त नशीली दवाइयों के नामों का उल्लेख उनसे बचने के उद्देश्य से किया गया है। हमारे समाज को अस्वस्थ और कमजोर बनाने में मादक द्रव्यों के व्यसन और नशीली दवाइयों की तस्करी की एक अवांछित भूमिका है, जिन पर काबू पाने में सरकारी प्रयासों के साथ-साथ समाज के लोगों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

नशीली दवाओं की तस्करी

नशीली दवाओं की तस्करी और अवैध दवाओं से उत्पन्न आर्थिक संकट के कारण आज देश-समाज को अस्थायित्व और हिंसा से लेकर पर्यावरण की क्षति जैसी भारी कीमत चुकानी पड़ रही है। दुनिया के किसी भी कोने में अवैध दवाइयों का निर्माण सस्ता और आसान होने के कारण इसका बाजार निरंतर फलता फूलता जा रहा है। देश में मादक द्रव्य व्यसन से पड़ने वाले प्रभावों की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार के अंतर्गत सामाजिक न्याय एवं सशक्तिकरण मंत्रालय द्वारा औषधि की मांग घटाने पर राष्ट्रीय कार्य योजना के तहत मद्यपान और मादक द्रव्य व्यसन को रोकने की योजना लागू की गई है। इस योजना में जन सामान्य में जागरूकता पैदा करने, मादक द्रव्य सेवन की लत का शिकार हुए लोगों को परामर्श देने, उनकी चिकित्सा तथा उनके पुनर्वास जैसी अनेक सेवाएं सम्मिलित हैं। इस कार्यक्रम में नशीली दवाइयों की लत का शिकार हुए व्यक्तियों तथा उनकी देखभाल से जुड़े उनके परिवार के सदस्यों के लिए शिक्षा कार्यक्रमों और सेवाओं के माध्यम से समुदाय आधारित निवारण प्रयास पर जोर दिया जा रहा है। विडंबना यह है कि नशीली दवाइयां सेवन करने वाले 20 प्रतिशत से कम लोग ही उत्पन्न विकारों का इलाज कराते हैं अथवा उन्हें इलाज की सुविधा उपलब्ध होती है।

एम्फेटामाइन प्रकार की उत्तेजक दवाइयां प्रयोग करने वाले लोगों की आधी संख्या महिलाओं की होती है,परंतु केवल 27 प्रतिशत महिलाएं उत्पन्न विकारों का इलाज कराने के लिए सामने आती हैं। पैलिएटिव केयर और दर्द से छुटकारा पाने के लिए फार्मास्युटिकल ओपिऑयड जैसी दवाइयां अत्यंत नियंत्रित खुराकों में दी जाती हैं, परंतु मुख्यतःनिम्न और मध्यम आय वर्ग के कई देशों, जहां विश्व की लगभग 86 प्रतिशत आबादी रहती है, में उन लोगों को भी उपलब्ध नहीं हो पाती जिन्हें इसकी नितांत आवश्यकता हो।

मादक द्रव्यों की तस्करी एक चुनौती

किसी एक देश अथवा क्षेत्र द्वारा मादक द्रव्यों की चुनौतियों का नीतियों पर आधारित सामना करना आसान बिल्कुल नहीं है। दि यूनाइटेड नेशंस ऑफिस ऑन ड्रग्स एंड क्राइम द्वारा प्रत्येक वर्ष वर्ल्ड ड्रग रिपोर्ट प्रकाशित की जाती है जिसका उद्देश्य नशीली दवाइयां की तस्करी और उसके व्यसन की समस्या पर वैश्विक स्तर पर इसके प्रति जागरूकता फैलाने को सहायता देना तथा साझे कार्यक्रमों जानकारी उपलब्ध कराना है। वर्ष 2023 की इस रिपोर्ट में नशीली दवाइयों के खतरे से बढ़ती जटिलताओं पर प्रकाश डाला गया है। नशीली दवाइयों से जुड़ी समस्याएं वैश्विक हो सकती हैं, परंतु इससे विश्व के सभी लोग एक समान प्रभावित नहीं होते। विश्व के सभी देशों, शहरों और गांवों के अल्प विकसित एवं अल्प सुविधा प्राप्त समुदायों के लोगों खासकर युवाओं को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ती है। नशीली दवाइयों की तस्करी के चलते हिंसा और असुरक्षा जैसी विकट स्थितियों का सामना करना उनकी मजबूरी बन जाती है। उनमें मादक दवाइयों से उत्पन्न विकारों में बढ़ोतरी होने तथा आवश्यक इलाज एवं सुविधाओं के अभाव का दंश झेलने जैसी गंभीर स्थितियों के उभरने की संभावना होती है। बहुधा गरीब लोग अनुकूल अवसर मिलन के साथ-साथ, संसाधनों की उपलब्धता एवं लचीले नियम कानून के चलते अवैध दवाइयों की फसल उगाने, मादक द्रव्यों के उत्पादन तथा उनकी तस्करी जैसे कार्यों में संलिप्त हो जाते हैं।

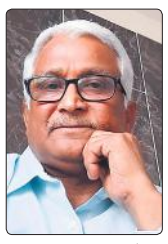

डॉ .कृष्णा नंद पांडेय
वरिष्ठ विज्ञान लेखक

अंतर्राष्ट्रीय मादक पदार्थ निषेध दिवस का इतिहास

संयुक्त राष्ट्र की जनरल असेंबली ने 7 दिसंबर, 1987 को प्रत्येक वर्ष 26 जून को "अंतर्राष्ट्रीय मादक पदार्थ व्यसन और अवैध तस्करी निषेध" दिवस के रूप में मनाने का फैसला लिया जिसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समाज को मादक द्रव्य व्यसन से मुक्त करने के लिए कार्यवाही और सहयोग को सुदृढ़ बनाना है। समुदाय में अवैध नशीली दवाइयों की तस्करी की प्रमुख समस्या के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए प्रत्येक वर्ष विश्व स्तर पर व्यक्तियों, समुदायों और विभिन्न संगठनों को सहायता प्रदान करना है।

सिंथेटिक नशीली दवाइयों का बढ़ता कारोबार

प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त नशीली दवाइयों की तुलना में फार्मास्युटिकल कंपनियों द्वारा निर्मित सिंथेटिक/रासायनिक नशीली दवाइयों की सुगम उपलब्धता इसके प्रयोगकर्ताओं और इसके अवैध व्यापार से जुड़े अपराधियों दोनों के लिए लाभदायक साबित होती है। मादक पदार्थों के सेवन की लत की गिरफ्त में आए लोगों की धारणा होती है कि सिंथेटिक नशीली दवाइयां पादप निर्मित नशीले पदार्थों की तुलना में अधिक प्रभावी मानी जाती है। नशे की लत का शिकार हुए अधिकांश लोग हेरोइन की तुलना में फेंटानिल नामक सिंथेटिक नशीली औषधि 25 से 50 गुणा अधिक प्रभावी मानते हैं। फेंटानिल नामक अवैध दवाई की सूक्ष्म से सूक्ष्म खुराक जानलेवा साबित होती है। अधिक मात्रा में हेरोइन की तस्करी की तुलना में कम मात्रा में फेंटानिल की तस्करी अपराधियों के लिए आसान होती है। एक अनुमान के मुताबिक संयुक्त राज्य अमेरिका में हेरोइन नामक मादक द्रव्य की वार्षिक खपत 50 मीट्रिक टन की तुलना में फेंटानिल की कुछ टन मात्रा पर्याप्त होती है। तस्करों के लिए उसकी कम मात्रा में तस्करी कम जोखिमपूर्ण लगती है। हालांकि कभी-कभी एकदम शुद्ध और अधिक प्रभावी सिंथेटिक औषधियों की आपूर्ति वैध तरीकों के माध्यम से की जाती हैं।

नशीले पदार्थों की तस्करी के विरुद्ध भारत की पहल

भारतीय कानून के अंतर्गत नारकोटिक्स ड्रग्स एंड साइकोट्रॉपिक सब्सटेंस एक्ट (एन.डी.पी.एस) 1985 के अंतर्गत किसी भी व्यक्ति द्वारा नारकोटिक्स ड्रग अथवा साइकोट्रॉपिक पदार्थ का उत्पादन, उसे रखना बेचना, खरीदना, एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाना, भंडारण अथवा सेवन करना अपराध माना गया है। भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं सशक्तिकरण मंत्रालय द्वारा वर्ष 2018 से 2025 की अवधि के दौरान मादक पदार्थों की मांग को घटाने पर पर एक राष्ट्रीय कार्य योजना तैयार की गई है जिसके अंतर्गत निवारक शिक्षा को बढ़ावा देने, जागरूकता पैदा करने, नशीली दवाइयां की लत का शिकार हुए व्यक्तियों की पहचान कर उन्हें परामर्श सेवा प्रदान करने, उनका इलाज तथा पुनर्वास करने तथा भारत सरकार के पारस्परिक मंत्रालयों और गैर-सरकारी संगठनों के पारस्परिक प्रयासों के माध्यम से सेवा प्रदान करने वाले व्यक्तियों को प्रशिक्षण देने जैसे पहलुओं को प्रधानता दी जाती है। इसके अलावा एनडीपीएस ऐक्ट, 1985 के अंतर्गत अवैध दवाइयों की तस्करी की समस्या का सामना करने के लिए नशीली दवाइयों और पदार्थों के व्यसन पर नियंत्रण रखने के लिए, उनकी लत का शिकार हुए व्यक्तियों की पहचान करने, उनका इलाज तथा पुनर्वास करने और नशीली दवाइयों के व्यसन के विरुद्ध जन सामान्य को शिक्षित करने के लिए राष्ट्रीय फंड की व्यवस्था की गई है। भारत को नशा मुक्त बनाने एवं मादक द्रव्यों के व्यसन से जुड़ी समस्या को हल करने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा वर्ष 2020 में आरंभ किए गए नशा मुक्त भारत अभियान की शुरुआत की गई। इस समस्या पर काबू पाने के लिए भारत सरकार की तीन एजेंसियों को मिलकर कार्य करने की जिम्मेदारी दी गई है। नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो द्वारा इसकी सप्लाई चेन को तोड़ने, सामाजिक न्याय एवं सशक्तिकरण मंत्रालय को लोगों में इसके हानिकारक प्रभावों के विषय में जागरूकता फैलाने तथा स्वास्थ्य विभाग द्वारा इसकी लत का शिकार हुए व्यक्तियों की स्वास्थ्य समस्याओं का इलाज करने की जिम्मेदारी दी गई है। श्रीलंका, मालदीव और बांग्लादेश जैसे भारत के पड़ोसी देशों से सीमावर्ती समुद्री मार्गों से नशीली दवाइयों की तस्करी की संभावना पर नजर रखने तथा उन पर काबू रखने के लिए भारतीय सुरक्षा एजेंसियों को भारतीय कोस्ट गार्ड द्वारा सहयोग करने की पहल की गई है। इसके अलावा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नशीली दवाइयों की तस्करी का मुकाबला करने के लिए समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए हैं। जिनमें प्रमुख हैं: यूनाइटेड नेशंस कन्वेंशन ऑन नारकोटिक्स ड्रग्स (1961), यू एन कन्वेंशन ऑन साइकोट्रॉपिक सब्सटेंस (1971), यू एन कन्वेंशन अगेंस्ट इलिसिट ट्रैफिकिंग ऑफ नारकोटिक्स ड्रग्स एंड साइकोट्रॉपिक सब्सटेंस (1988), यू एन कन्वेंशन अगेंस्ट ट्रांस्नेशनल ऑर्गेनाइज्ड क्राइम (यूएनटीओसी) 2000 जैसे समझौते प्रमुख हैं।

भारत में स्थिति

नशीली दवाओं की तस्करी के संदर्भ में भारत की स्थिति विख्यात गोल्डन क्रिसेंट और गोल्डन ट्रायंगल के बीच एक सैंडविच की तरह है। गोल्डन क्रिसेंट इलाके में अफगानिस्तान, ईरान और पाकिस्तान के क्षेत्र शामिल हैं। अफगानिस्तान से सटे पाकिस्तान के कुछ इलाकों से पाकिस्तानी तस्कर अफगानिस्तान से अफीम की तस्करी कर उसे हेरोइन में परिवर्तित कर भारत में खपाते हैं। इसी प्रकार गोल्डन ट्रायंगल में वियतनाम, थाईलैंड, लाओस और म्यांमार जैसे देशों के सीमावर्ती क्षेत्र शामिल हैं, जहां से अवैध तरीके से नशीली दवाइयों की खेप भारत में पहुंचाई जाती है। इन क्षेत्रों में निर्मित हेरोइन और मेथांफीटामाइन जैसे मादक पदार्थ चीनी सीमा से सटे इलाकों से भी भारत में पहुंचाए जाते हैं। इन दो क्षेत्रों में नशीली दवाओं की तस्करी भारत सरकार की सुरक्षा एजेंसियों के लिए सिर दर्द बनी हुई है। नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के अनुसार भारत में नशीली दवाइयों की लगभग 70 प्रतिशत तस्करी अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के समुद्री मार्गों से भी की जाती है। वर्ष 2018 में भारत सरकार के सामाजिक कल्याण एवं सशक्तिकरण मंत्रालय द्वारा भारत में मादक द्रव्यों के व्यसन की स्थिति और उसके स्वरूप पर संपन्न एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण के अनुसार 10 से 75 वर्ष की आयु वर्ग के लोगों में अल्कोहल का सेवन 14.6 प्रतिशत, गांजा-भांग 2.83 प्रतिशत तथा ओपिएट्स/ओपिऑयड्स का सेवन 2.1 प्रतिशत पाया गया था। वर्ल्ड ड्रग रिपोर्ट 2022 के अनुसार भारत में वर्ष 2020 में 5.2 टन अवैध अफीम बरामद की गई थी। इस अवधि में 0.7 टन मॉर्फिन नामक मादक द्रव्य जब्त किया गया था।

शिक्षा के प्राचीन वैभव की पुनर्स्थापना

किसी भी देश की ज्ञान परंपरा को किसी पुस्तकालय को जला देने से नष्ट नहीं किया जा सकता। जब 1199 ईसवी में विदेशी आक्रांता बख्तियार खिलजी ने नालंदा विश्वविद्यालय के भवन को नष्ट करने के साथ पुस्तकालय को नष्ट किया था, तब उसने सोचा होगा कि वह ज्ञान की सनातन परंपरा को नष्ट कर, देश की संस्कृति को नष्ट कर देगा, लेकिन आज इतिहास के पुनरावलोकन और वर्तमान के धरातल पर खड़े होकर यह कहा जा सकता है कि वह बर्बर और क्रूर आक्रांता पूरी तरह गलत था। उसने भले ही पुस्तकालय को आग लगा दी हो। भले ही किताबें धूं-धूं कर जल गई हों, लेकिन वह ज्ञान की शाश्वत परंपरा को जला नहीं पाया, क्योंकि यह परंपरा हमारे विचारों और व्यवहार में थी।

डॉ. प्रशांत अग्निहोत्री
निदेशक, रुहेलखंड शोध संस्थान, शाहजहांपुर

बिहार के राजगीर में वैभारगिरी की तलहटी में बने अंतर्राष्ट्रीय नालंदा विश्वविद्यालय के 455 एकड़ में 1749 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित नवीन परिसर का उद्घाटन करते हुए भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सही ही कहा कि, "आग की लपटों ने भले ही पुस्तकें जला दीं, लेकिन वे लपटें ज्ञान को नहीं मिटा सकतीं। नालंदा केवल नाम नहीं है। नालंदा एक पहचान है,एक सम्मान है। नालंदा एक मूल्य है,वह एक मंत्र है। नालंदा गौरव गाथा है।" उन्होंने आगे कहा कि "नालंदा के ध्वंस ने भारत को अंधकार से भर दिया था। अब इसकी पुनर्स्थापना भारत में स्वर्णिम युग की शुरुआत करने जा रही है।"

यह निश्चित तौर पर देश के लिए एक अविस्मरणीय अवसर है, जब 815 वर्षों बाद पुनः अपनी प्राचीनता के संस्कारों को समेटे हुए, नई तर्ज पर विश्वविद्यालय के नवीन परिसर का निर्माण हुआ है। ज्ञातव्य है कि भारत का यह प्राचीन विश्वविद्यालय संपूर्ण विश्व में अपने ज्ञान के लिए प्रसिद्धि प्राप्त विश्वविद्यालय था। यहां पढ़ने के लिए विदेश से भी छात्र आया करते थे। विश्वविद्यालय का उत्कर्ष पांचवीं शताब्दी के मध्य में गुप्त राजाओं के उदार दान से हुआ था। ए.यस.अल्तेकर अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति में लिखते हैं कि "विद्या के केंद्र के रूप में नालंदा का इतिहास लगभग 450 ई. से प्रारंभ होता है। यह भारत की धार्मिक सहिष्णुता

का भी प्रमाण है,क्योंकि इस बड़े बौद्ध विश्वविद्यालय के विकास के लिए सर्वाधिक दान हिंदू गुप्त शासकों ने ही दिए। शक्रादित्य (कुमार गुप्त प्रथम), तथागत गुप्त, नरसिंह बालादित्य, बुद्ध गुप्त आदि ने इसके विकास में बहुत सहायता की। 11 वीं शताब्दी तक हिंदू तथा बौद्ध राजाओं ने बिहार निर्माण की इस परंपरा को अविच्छिन्न रखा। 675 ई. के आसपास जब इत्सिंग नालंदा में निवास करता था तब यहां लगभग 3000 विद्यार्थी अध्ययन करते थे। वहीं युवान् च्वांग का जीवनी लेखक लिखता है कि सातवीं शताब्दी के मध्य में नालंदा में विद्यार्थियों की संख्या 10000 थी। यहां कई हजार भिक्षु विनय के नियमों का कड़ाई से पालन करते थे। वे निरंतर ज्ञानार्जन और शास्त्रार्थ में तल्लीन रहते थे। समय-समय पर तत्कालीन नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति रहे धर्मपाल, चंद्रपाल, गुणमति, स्थिरमति, प्रभामित्र, जिनमित्र, शील भद्र आदि अपने पंडित्य के लिए विख्यात थे। नालंदा के यश से आकर्षित होकर चीन, जापान, कोरिया, तोखारा आदि से विद्यार्थी यहां पढ़ने आते थे। इनमें फाहियान, युवान् च्वांग, इत्सिंग, थान-मि, हुवैन-च्यू, ताऊ-हि, ह्वि-निह, आर्यवर्मन, ताओ सिंग, तांग, हुइ-लू आदि कुछ सुप्रसिद्ध नाम हैं। नालंदा विश्वविद्यालय में एक विशाल पुस्तकालय था। चीनी विद्वानों के नालंदा में वर्षों टिके रहने का कारण यह था कि वे यहां के विशाल पुस्तकालय से बौद्ध आगमों और अन्य पुस्तकों की शुद्ध प्रतिलिपियां प्राप्त कर सकते थे। इत्सिंग ने नालंदा में 400 संस्कृत पुस्तकों की प्रतिलिपि तैयार की थी। इस पुस्तकालय के तीन विशाल भवन थे जिनके नाम- रत्न सागर, रत्नोदाधि और रत्नरंजक थे। इस महान विश्वविद्यालय को 12 वीं शताब्दी के अंत में मुस्लिम आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी के नेतृत्व में नष्ट कर दिया गया।

भवन या तो जला दिए गए या धराशाई कर दिए गए। वहां अध्ययन और अध्यापन करने वाले भिक्षुओं को तलवार के घाट उतार दिया गया और अमूल्य पुस्तकालय को फूंक दिया गया। इसे पूरी तरह नष्ट-भ्रष्ट कर भी, वे ज्ञान की परंपरा को समूल नष्ट नहीं कर सके। यह अलग बात है कि उन्होंने इसे बहुत भारी क्षति पहुंचाई, लेकिन अपनी राख से एक बार फिर यह विश्वविद्यालय पुनर्जीवित हो उठा है। वस्तुतः इसका पुनर्जीवन भारतीय ज्ञान, कौशल और अध्यात्म की पुनर्स्थापना का स्वर्णिम अवसर है। कोई भी देश अपनी शिक्षा और संस्कारों के बल पर ही विकसित और सामर्थ्यशील बन सकता है। सारे विश्व के इतिहास पर यदि हम दृष्टिपात करें,तो हम देखेंगे कि दुनिया में जो भी विकसित देश हैं,उन्होंने अपने ज्ञान और संस्कृति को विकसित कर ही विश्व के नेतृत्वकर्ता की स्थिति प्राप्त की है। यदि भारत को विश्व का नेतृत्व करना है तो उसे फिर से अपनी शैक्षणिक संस्थाओं को उस स्तर का बनाना होगा,जिस स्तर पर दुनिया के विद्वान मस्तिष्क हमारी शैक्षणिक संस्थानों में आकर शिक्षा ग्रहण करने के लिए ललायित हों। हम ऐसी शिक्षण संस्थाओं का निर्माण करके विश्व में सांस्कृतिक विनिमय का केंद्र बन सकते हैं।

विश्व की विभिन्न संस्कृतियों का समावेश

नालंदा विश्वविद्यालय का नवीन परिसर विश्व धरोहर सूची में शामिल प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के भग्नावशेषों के पास ही बनाया गया है। इसके स्थापत्य और निर्माण में प्रारंभिक ऐतिहासिक स्वरूप का पूरा ध्यान रखा गया है। 8.3 किलोमीटर लंबी दीवार से घिरे, विश्वविद्यालय परिसर में 100 एकड़ का जल निकाय क्षेत्र बनाया गया है। विश्वविद्यालय में आहर पाइन नेटवर्क की स्वदेशी जल प्रबंधन प्रणाली के माध्यम से वर्षा जल के संचयन का प्रबंध किया गया है। यह वर्षा जल विश्वविद्यालय की सभी जल आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है। जल संचयन के लिए दो दर्जन से अधिक छोटे-बड़े तालाबों की खुदाई की गई है। प्राचीन ऐतिहासिक बस्तियों की तरह विश्वविद्यालय की वर्तमान इमारत एक झील से घिरे परिसर जैसी दिखाई देती है। यहां कमल सागर नामक झील का निर्माण स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखकर किया गया है। इस कमल सागर के बीच में एक भव्य ऑडिटोरियम का निर्माण किया गया है। विशेष बात यह है कि यह विश्व का सबसे बड़ा नेट जीरो, हरित, कार्बन तटस्थ तथा टिकाऊ कैंपस है। अपनी जल, ऊर्जा आदि की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति विश्वविद्यालय स्वयं करता है। विश्वविद्यालय के भवन में लगे एसी बिजली से चलने के स्थान पर भाप ऊर्जा के प्रयोग से संचालित होते हैं। विश्वविद्यालय में एक नौ मंजिला पुस्तकालय भवन का निर्माण किया गया है जिसकी पुस्तक क्षमता तीन लाख पुस्तकों की है। यहां बौद्ध अध्ययन के साथ विभिन्न प्राचीन आधुनिक विषयों के अध्ययन के लिए विभागों को बनाया गया है। इसके साथ ही यहां सामान्य पुरालेख संसाधन केंद्र की स्थापना भी की गई है जिसमें एशियाई देशों की कलाकृतियों के दस्तावेजीकरण का काम बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। इस वक्त यहां पर 20 से अधिक देशों के छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। विश्वविद्यालय एशियन इंडिया यूनिवर्सिटी नेटवर्क बनाने की दिशा में भी गंभीरता से काम कर रहा है। निश्चित ही विश्वविद्यालय अपने पुनर्निर्माण के साथ भारत की ज्ञान और मानव कल्याण की महान परंपरा में अपना अतुलनीय योगदान देगा। सांस्कृतिक आदान-प्रदान की गहन भूमिका का निर्माण भी यह नवीन नालंदा अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय करेगा। दुनिया के विभिन्न देशों के बीच शिक्षण में यह एक पुल के रूप में विश्व की विभिन्न संस्कृतियों, विचारों, ज्ञान परंपराओं और कौशलों को जोड़ेगा। यह नालंदा का ही नवजागरण नहीं है वरन् यह संपूर्ण भारतीय शैक्षणिक परंपरा के नवजागरण का भी अवसर है।

व्यंग्य

व्यंग्य की उर्वर भूमि

रेखा शाह
बलिया

अपना देश व्यंग्य लिखने वालों के लिए यदि कहा जाए कि स्वर्ग है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। स्वर्ग किसे कहा जाता है? स्वर्ग वही स्थान है,जहां पर किसी चीज का अभाव न रहे। अपने देश में भी समस्याओं का अभाव नहीं रहता है। आप आधा किलो दुख खोजने जाएंगे,दो किलो आपको मुफ्त में मिल जाएगा। समस्याओं के लिए न कोई मूल्य चुकाना है और न ही प्रतीक्षा करनी है। यह स्वयं ही आपके पास दौड़ी चली आएंगी। इसलिए हो गया न व्यंग्य का स्वर्ग। हर दिन वयंग्य लिखने वाले को दो-चार नया विषय मिल ही जाता है।

चाहे वह बौद्धिक रूप से कितना भी गरीब रहे या अपनी आंख कितनी भी मूंदकर रखे या कानों में रेड़ी (अरंडी) का तेल डालकर पड़ा रहे। या वह टीवी और न्यूज पेपर से भले ही सौ कदम भागता रहे,पर कुछ न कुछ समस्याएं होती रहती हैं और इसके कारण मन में क्रोध उपजता है। कभी न कभी जमीर जाग जाता है और विद्रोह पर उतारू हो जाता है। व्यंग्य लिखने का मसाला मिल जाता है। समस्याओं की निरंतर आवक होने से अपने देश में व्यंग्यकारों के हमेशा पौ बारह रहती है।

दुनिया भले ही हताश निराश हो जाए, लेकिन एक व्यंग्यकार कतई निराश नहीं होता है। वह संभावनाओं के द्वार खोजता ही रहता है। हर एक समस्या में अपने लेखन के लिए कुछ न कुछ खोज ही लेता है और इस काम से

उसे मृत्यु ही विमुख कर सकती है अन्यथा और कोई नहीं कर सकता। व्यंग्यकार एक बारगी व्यंग्य को भले छोड़ दे,लेकिन व्यंग्य उसे छोड़े तब न उसका पीछा छूट। यह दो लोगों की जुगलबंदी बहुत ही खराब है। एक तो जमीर वाले लोग और दूसरा यदि वह व्यंग्यकार भी रहे। ऐसे लोगों से तो धरती के बड़े से बड़े लोग पनाह मांगते हैं। अपना देश तो छोड़िए पड़ोसी देश भी एकाद को छोड़कर बाकी ऐसे बिना सिर पैर के मिले हैं कि दो-चार व्यंग्य व्यंग्यकार से लिखवा ही लेते हैं। उनके यहां भी उठा पटक जैसे परिस्थिति और स्थिति कुछ न कुछ लगी रहती है। वैसे अपने देश में भी व्यंग्य को लिखने के लिए मूलभूत मैटेरियल की कोई कमी नहीं है, जो हम पड़ोसी देशों से विषय उधार लेने जाए। अपना देश इस मामले में आत्मनिर्भर है। हमारे यहां समस्याएं विदेशी डिस्को घास के जैसी हैं। बिना खाद पानी दिए भी भरपूर पैदावार होती है।

व्यंग्यकार को कुछ लोगों का आभारी होना चाहिए। इनमें है पहले नंबर पर देश के तारणहार नेता और जनता के सुख के बजाय दुख बढ़ाने वाली पुलिस तथा जनता को स्वस्थ करने से ज्यादा बीमार करने वाले अस्पताल व डॉक्टर यह सब ऐसे प्राणी है जिनका व्यंग्य विधा हमेशा और व्यंग्यकार आभारी रहेंगे। व्यंग्य ने व्यंग्यकार को रोजी दी है,पर रोटी न दे सके। रोटी देना तो सरकार के भी बस में नहीं है तो व्यंग्य विधा भला किस खेत की मूली है। इसीलिए अधिकांश व्यंग्यकार स्वभाव से अक्खड़ और जेब से फक्खड़ होते हैं और जिस भी व्यंग्यकार को व्यंग्य से रोजी और रोटी दोनों मिल रही है तो समझ जाइए मामला कुछ झोल वाला है,लेकिन खुशी की बात यह है कि ऐसा होता नहीं है।

व्यंग्य लिखने वाला जमीर का सौदा नहीं करता और जो जमीर का सौदा करता है,वह व्यंग्य नहीं लिख सकता। दोनों ही एक दूसरे के दुश्मन होते हैं, जिनका पेट भरपेट भरा होता है उनके लिए व्यंग्य काफी कठिन लगता है। खाली पेट वालों की तो जिंदगी ही एक व्यंग्य होती है। वह चाहे या न चाहे कुछ ना कुछ व्यंग्य रूप में उनके श्रीमुख से निकल ही जाता है और व्यंग्यकार उसे लपक कर व्यंग्य की शक्ल देता है। व्यंग्य में व्यंग्यकारों की रुचि इसलिए भी रहती है,क्योंकि वह भी खाली जेब और खाली पेट रहता है। व्यंग्यकार तो खुद दस बीस व्यंग्यों के मूल में रहता है।

कविता

कह रहा हूं तजुर्बा

अर्थ ही से खजाना भरा
इसलिए, मन चमन यह नहीं है हरा इसलिए।

पेड़ काटे गए, ताल पाटे गए,
स्वार्थ ही के चरण
चूमे-चाटे गए।

दी गई है तिलांजलि यहां 'सूझ' को, ताप से जल रही है धरा इसलिए।

भूजल स्तर घटा,
दिल धरा का फटा, मेघ दिखते नहीं खोई काली घटा।

हैं स्वयं इन्द्र प्यासे भटकते यहां, कोई आती नहीं अप्सरा इसलिए।

डींग-ही-डींग है, पींग-ही-पींग है, शस्त्र के नाम पर सींग-ही-सींग है।

पूजता था प्रकृति जो, वो दुश्मन बना, आदमी जा रहा है मरा इसलिए।

हो न ऐसे मरण, चाहता यदि भरण, पेड़-पौधे लगा, आ प्रकृति की शरण।

मान ले अन्यथा कुछ बचेगा नहीं, कह रहा हूं तजुर्बा खरा इसलिए।

घनश्याम अवस्थी
गोंडा

अनुमान नहीं लगते

अनुकंपा पर ही सांसों के
पैकेज हैं मिलते।
केवल परदों से घर के
अनुमान नहीं लगते।

बड़ी बड़ी दीवारें औ
दालान सिमट आए।
अहम सभी के चौराहों पर
आकर टकराए।

पूरब में उगने वाले ही,
पश्चिम में ढलते।
बस विडंबना ओढ़ रहे हैं
विकृतियों के साथ।
बातें हैं लंबी चौड़ी पर
कटे हुए हैं हाथ।

आलपिनी संवादों से सब
दूर-दूर बचते।
भागमभाग मची जीवन में,
पल-पल बिखर रहे।

इस उधेड़बुन में ही तो हो
सबसे दूर गए।
खुदी बुने हैं जाल और खुद
ही तो हैं फंसते।

पंकज मिश्र 'अटल'
शाहजहांपुर

पिता का साया

हर बच्चे में होती है, माता पिता दोनों की काया,
अगर मां है बच्चों के लिए छाया,
तो पिता है बच्चों का साया,
इसलिए ये कहना बिल्कुल सच होगा
मां ने अगर हमे जिंदगी दी है तो,
पिता ने उसे संवारा है, माना कि मां ने हमे रोटी पका के खिलाई है,
तो पिता ने उसका जुगाड़ लगाया है,
माना कि मां ने हमें घर पर चलना सिखाया है, तो पिता ने हमे कंधे पर बिठाकर दुनिया की सैर कराई है,
माना की मां ने हमे घर पर पढ़ना सिखाया, तो पिता ने स्कूल में हमारा दाखिला करवाया,
इसलिए मैं सिर्फ मां को ही क्यों नमन करूं? पिता को भी कोटि कोटि नमन करती हूं,
क्योंकि उन्होंने भी मेरे लिए खून पसीना बहाया है,
इसलिए हर बच्चे के लिए मां पिता दोनों बराबर है,
क्योंकि दोनों ने मिलकर बच्चे की जिंदगी संवारी है।

रीना सोनालिका चास
लेखिका

जनता ने तुमको दुलारा

जब आई चुनने की बारी जनता ने
तुमको दुलारा
तुम भी उनकी पीड़ाओं से संवेदित
हो गले लगाओगे
इसी आस ने अपना दे विश्वास
तुम्हें दिल से अपनाया

अब अपने घाव भरे जाएंगे जितने
भी हैं जख्म हरे जाएंगे
लेकिन जब-जब बारी आई
तुमने अक्सर पीठ दिखाई

लेकिन ये क्यों लगा तुम्हें
सिंहासन का पथ राजपंथ है
इसीलिए उस तक जाने को तुमने
क्या-क्या ख्वाब दिखाए

वहां पहुंच तुम उलझे ऐसे
कैसे करें राष्ट्र की सेवा ये भी
तुम समझ न पाए
या फिर वहां पहुंच तुमको ये सब
कर्तव्य हो गए पराए

तुमने क्या सोचा तोड़ भरोसा
अपनी तृष्णा में डूबोगे
सत्ता के आमोद-प्रमोद से
जीवन की अमराई छूलोगे

लेकिन तुम ये कैसे भूल गए
जो देकर अपने प्यार हृदय का
आसमान पे तुम्हें बिठाएगा
जब होगी उसकी भृकुटी टेढ़ी
भस्मसात कर जीवन तेरा गर्त
तुम्हें वो पहुंचाएगा।

प्रो. प्रभात द्विवेदी
चिन्यालीसौड़, उत्तरकाशी

कहानी

आस्था और अधिकार

रमेश चन्द्र द्विवेदी
पूर्व प्रधानाचार्य, नैनीताल

"अतुल! तुम मेरी आस्था पर प्रहार कर रहे हो। तुमने वचन दिया है कि हम एक-दूसरे की भावना का सम्मान करेंगे। धर्म आस्था का विषय है। श्रद्धा और विश्वास इसका आधार है। क्या तुम्हें पता है, जब तुम सीमा पर होते हो तो मैं तुम्हारी रक्षा के लिए इसी श्रद्धा और विश्वास का सहारा लेती हूं। खैर तुमको इन सब बातों से क्या मतलब?" अंजना के मुख से निकले हुए शब्दों को अतुल ध्यान से सुनता रहा। प्रत्युत्तर में उसने कहा-"मैं जब तुम्हारे पास होता हूं तो मुझे तुम्हारा 'क्वालिटी टाइम' चाहिए। मैं नास्तिक नहीं हूं,पर मैं दिखावे के लिए पूजा-पाठ नहीं करता। सीमा पर सैनिकों के पास इतना समय कहां रहता है? हमेशा चौकस और सावधान रहना पड़ता है। पता नहीं दुश्मन की कौन-सी गोली सीना चीर कर निकल जाए।"

"अच्छा तो मेरा आस्तिक होना तुम्हें दिखावा लगता है। धर्म दिखावे या प्रर्दशन की वस्तु नहीं है,जो सहजता के साथ धारण किया जाए वही धर्म है। तुम्हें क्वालिटी टाइम चाहिए तो उसके लिए मैं प्रस्तुत हूं। सुरमई शाम ढलने वाली है मेरे आशिक ये तुम्हारे धैर्य की परीक्षा है।" अतुल और अंजना एक ही कॉलेज में पढ़ते थे। पढ़ाई के समय इनकी दोस्ती प्रगाढ़ हुई और दोनों ने वादा किया कि कैरियर तय करने के बाद हम विवाह के बंधन में बंधेंगे। अतुल सजातीय नहीं था यही इस राह की सबसे बड़ी बाधा थी। अंजना और अतुल की कोशिश यही थी कि परिवार की रजामंदी से हम हम दोनों परिणय-सूत्र में बंधे तो अच्छा रहेगा। अंजना को विश्वास था कि उसके मम्मी-पापा मान जाएंगे।

समय हर समस्या का समाधान करता है। अतः इंतजार करना ही बेहतर विकल्प है। पढ़ाई समाप्त होने के पश्चात् अतुल भारतीय सेना में कमीशंड अधिकारी बन गया और अंजना सार्वजनिक क्षेत्र के एक बैंक में ब्रांच मैनेजर। नौकरी मिलते ही अतुल ट्रेनिंग के लिए चला गया और अंजना सिटी ब्रांच में बैंक की नौकरी।

दोनों के बीच में संवाद का माध्यम मोबाइल रहा। अंजना के मम्मी-पापा कभी उसके पास रहने के लिए आ जाते। पापा-मम्मी जब उसकी शादी की चर्चा करते तो वह टाल जाती। एक दिन जब बैंक से अवकाश मिला तो अंजना ने अपनी मम्मी से अतुल के बारे में सारी बात बता दी। उसने यह भी बता दिया कि अतुल गैर बिरादरी का है। तब उसकी मम्मी ने कहा था कि उसके पापा शायद ही इस रिश्ते को स्वीकार करें,लेकिन तुम चिंता मत करो मैं कोशिश करूंगी की पापा मान जाएं। विजातीय विवाह पर समाज अपनी स्वीकृति नहीं देता। अपनी पत्नी राधा की बात सुनते ही अंजना के पापा भगवत शरण भड़क उठे। बैंक से आने के बाद उन्होंने अंजना से स्पष्ट शब्दों में कह दिया- "मैं तुम्हारे लिए लड़का देख रहा हूं तुम अतुल को भूल जाओ।" इतना कहने के बाद वह अपना क्रोध प्रकट करते हुए अपनी पत्नी के साथ चल दिए। अंजना को पहले से पता था कि उसके पापा उसके प्रस्ताव पर सहमति नहीं देंगे । अतः पापा को मनाने की जिम्मेदारी मम्मी पर डाल दी।

ट्रेनिंग पूरी करने के बाद अतुल की नियुक्ति बारामूला में हो गई। अवकाश की अवधि में वह घर आया। अपनी मम्मी-पापा से मिलकर शादी के बारे में अपना निश्चय बता दिया। उसके मम्मी-पापा बेटे की खुशी के लिए सहमत भी हो गए। वह अंजना से मिलने के लिए भी आया और साथ में यादों की पूरी रील। अपने मम्मी-पापा की सहज स्वीकृति से भी अंजना को अवगत कराया। अंजना के पापा अपनी जिद पर अड़े रहे। अतः अतुल और अंजना ने तय किया कि कोर्ट मैरिज कर लेते हैं। दोनों इस योजना पर काम करने लगे। निश्चित समय पर कोर्ट मैरिज करने के बाद अंजना और अतुल ने मंदिर में जाकर सात फेरे लिए। उस समय केवल उसके खास दोस्त,रिश्तेदार ही उपस्थित थे। अंजना की मम्मी आशीर्वाद देकर चली गईं। पापा को नहीं आना था तो नहीं आए। अंजना विदा होकर ससुराल आ गई। शादी के बाद का समय रंगीन सपनों की तरह होता है। रोमांस और रोमांच से भरी दुनिया बिल्कुल परीलोक की तरह होती है। समय पंख लगाकर उड़ जाता है। अतुल की अवकाश अवधि समाप्त हो गई। अंजना को भी अपनी ड्यूटी ज्वाइन करनी थी। अतः दोनों अपने कर्म क्षेत्र में सन्नद्ध हो गए।

अतुल को सेना से जब भी अवकाश मिलता वह आता और अंजना के साथ अपना क्वालिटी टाइम व्यतीत कर चला जाता। अब उसके विचारों में भी परिवर्तन आ गया है। कर्म के साथ जब धर्म जुड़ता है तो धर्म की परिभाषा अर्थवान हो जाती है। अंजना के पापा-मम्मी का एक दिन अचानक आगमन हुआ। भगवत शरण ने भूल स्वीकार करते हुए कहा-"माता-पिता को बच्चों की खुशी में ही अपना सुख देखना चाहिए। इसलिए मैं खुले मन से तुम दोनों को आशीर्वाद देने आया हूं।" अंजना की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। पापा के आशीर्वाद के बिना उसे अपनी जिंदगी अधूरी सी लग रही थी। आज अतुल और अंजना अपनी वैवाहिक जिंदगी से संतुष्ट हैं और मम्मी-पापा की हर सुख-सुविधा का ख्याल रखते हैं। धर्म में उनकी आस्था पहले से अधिक बलवती और मजबूत हुई है।

किस्सा

अनदेखा प्यार

आशुतोष वाजपेयी
युवा कहानीकार

अस्सी का वो दशक जब दूर दराज में बसे किसी व्यक्ति से जब मन मिल जाता था तब उससे बात करने की और उसके बारे में जानने की इच्छा हिलोरे मारने लगती थी। उस वक्त अंतर्देशीय पत्र और पोस्ट कार्ड का दौर था। आरती डाकखाने से अंतर्देशीय पत्र खरीद लाती और अपने दिल को उस पत्र पर लिखकर,सजाकर अपने मित्र को भेज देती थी और जिस दिन भेजती थी,उस दिन से लेकर उस पत्र के जवाब आने तक, वह बस इसी कल्पना में रहती थी कि उन्होंने मेरे इस सवाल का जवाब ऐसा दिया होगा! मेरे उस सवाल का मतलब समझ आ जाए तो बस बात बन जाए। यही कोई 15 से 16 दिनों के बाद जब डाकिया दरवाजे की कुंडी को खटकाता और कहता डाकिया, वह उसकी आवाज को सुनकर दौड़ी-दौड़ी चली जाती और बड़े चाव से अपने पत्र को प्राप्त कर, वापस बिस्तर पर लेट जाती और बड़ी तसल्ली से पत्र को खोलती। जिस शिद्दत से वह पत्र लिखती थी उसी शिद्दत से उस पत्र का जवाब मिलता था। पत्र की कुछ बातों को पढ़कर उसका दिल खिल जाता और सोच में डूब जाती कि अगर वे मेरे सामने होते तो वह उनके सीने से लग जाती और इनकी धड़कनों को सुनती। पत्रों का सिलसिला शुरू हुआ और पता ही नहीं चला कि कब ये सिलसिला इंतजार में बदलने लगा। कई बार तो काफी दिनों के बाद पत्र आता और जब ऐसा होता तो उसकी छोटी बहन उसे छेड़ती और पूछती थी "आखिर ऐसा क्या खो गया है तुम्हारा कि तुम दिनभर बैचेन रहती हो,ऐसा लगता है कि तुम किसी की तलाश में हो। दीदी मुझे लगता है कि डाकिए ने तुम्हारा पत्र कहीं खो दिया है। एक काम करो तुम दूसरा पत्र लिखो"। उसकी छोटी बहन जानती थी कि आरती अनिल को (अनिल पुलिस में इंस्पेक्टर है। पुलिस वाले इतने सीधे नहीं होते हैं जितना कि अनिल है। अनिल शरीफ और सरल व्यक्ति है और साथ ही उम्र में आरती से दो साल छोटा है) चाहने लगी है। इस बार आरती ने तय कर लिया था कि वह अनिल से पूछ लेगी कि क्या वह उसे भूल सकता है? एक रोज दोपहर में वह कॉलेज से आई तो सीमा ने कहा, "दीदी मेरे पास तुम्हारे लिए कुछ है"। आरती उदास थी,क्योंकि वह सोच ही नहीं पा रही थी कि अनिल से पूछे या न पूछे? इसलिए वह बहुत ही सुस्त होकर बोली,"सीमा, मेरा सर दर्द कर रहा है, ठंडा शर्बत बना दे"। सीमा ने शर्बत तो दिया और साथ ही कहा कि "दीदी तुम्हारा जो दर्द है वो शर्बत से नहीं चिट्ठी से जाएगा"। उसने सीमा की ओर देखा और पूछा "कैसी चिट्ठी और किसकी है"? सीमा ने कहा, "सोचो सोचो,आपको चाहने वाला कौन है"? उसने पूछा, "अनिल की चिट्ठी आई है"? सीमा ने कहा,"हां दीदी, लो पढ़ो..." वो पत्र,आरती की जिंदगी का सबसे नायाब पत्र था, क्योंकि जो वह सोच रही थी उसमें उससे जुड़ा हुआ सवाल था।

आरती का सवाल और अनिल का सवाल, लगभग एक जैसा ही था बस फर्क इतना था कि वह अभी सोच ही रही थी और अनिल ने उससे जवाब मांग लिया। उस दिन वह बहुत खुश थी। अगले दिन आरती डाकखाने गई वहां उसकी मुलाकात उसके कॉलेज के मित्र राकेश से हुई। राकेश उसे कॉलेज के समय से पसंद करता था, लेकिन आरती ने उसे कभी एक सामान्य मित्र से ज्यादा कुछ नहीं माना। खैर बातों बातों में राकेश ने बताया कि उसकी शादी तय हो गई। उसने आरती को अपनी शादी का निमंत्रण दिया और कहा," आरती, तुम आओगी तो मुझे खुशी होगी और तुम्हें भी खुशी होगी"। राकेश की बात उसे कुछ समझ नहीं आई, उसने कुछ देर रुककर राकेश से पूछ ही लिया कि "शादी में मुझे क्यों खुशी होगी"? राकेश ने कहा, "जब आओगी तो जान जाओगी"। उसी रात आरती ने अनिल को पत्र लिखा और पत्र में अपना जवाब भी लिख दिया और साथ ही शादी करने की इच्छा जाहिर कर दी। उस पत्र के बाद अनिल के पत्र का काफी दिनों तक इंतजार किया,लेकिन अनिल का कोई जवाब नहीं आया।

अनिल और आरती के बीच आखिरी बातचीत हुए तकरीबन दो साल से ऊपर का समय हो गया था। आरती एक शादी में गई हुई थी, वहीं उसकी मुलाकात अनिल से हुई। अनिल से मिलने से पहले वह नहीं जानती थी कि यही अनिल है। उसने कभी अनिल को देखा नहीं था और न अनिल ने उसे देखा था। चिट्ठी पत्री में हुई बातचीत से उन्होंने एक दूसरे के बारे में जाना और समझा। हुआ यह था कि एक यात्रा के दौरान आरती अपना पर्स ट्रेन में भूल गई थी,उसमें उसके कॉलेज के जरूरी कागज थे। पर्स खोने के दो महीने बाद उसे एक पार्सल मिला खोला तो देखा कि उसका पर्स है। पर्स के साथ एक पत्र भी था। बस उसी पत्र से आरती के जीवन का पात्र मिल गया। हां तो, फंक्शन में अनिल ने उससे नमस्ते किया और उसका नाम पूछा। उसने अपना नाम बताया, नाम जानने के बाद अनिल ने अपना नाम बताया। दो से तीन दिन के अंदर उनकी काफी बातचीत हुई। जब आरती चलने को हुई तो अनिल थोड़ा उदास लगा,वह अनिल के पास आई और पूछा कि तबियत तो ठीक है न? अनिल ने तब उसे बताया कि आरती जी,"मुझे जिनका इंतजार है उनका नाम भी आरती है। मैं पुलिस में इंस्पेक्टर हूं"। फिर अनिल ने आरती के संक्षेप में अपनी कहानी बताई। अनिल की बातों को सुनते हुए उसकी आखों से आसूं बहने लगे तब अनिल ने उससे कहा माफ कीजिएगा शायद आपको मेरी बातों से तकलीफ हुई है या कोई जख्म ताजा हो गया है। आरती ने अनिल से कहा, मैं आरती हूं जिसका पर्स तुमने पार्सल किया था। मेरा बस इतना कहना हुआ कि अनिल ने उसे सभी सामने अपनी बाहों में भर लिया।

समीक्षा

विसंगतियों पर प्रहार करतीं गजलें

सरजमीन-ए-लखनऊ में जन्मे मारूफ शायर जनाब कृष्णबिहारी 'नूर' जिनको अदब की दुनिया में इज्जतदाराना मुकाम हासिल है। वो जब किसी मुशायरे में मंचासीन होते तो ऐसा लगता था, मानो पूरा लखनऊ मंच पर बैठा हो। उन्होंने अपने जीवनकाल में कई शिष्य बनाए या यूं कहें कि उनका शिष्य बनकर शायर खुद पर फख्र महसूस करता था। नूर साहब की एक बहुत ही मशहूर गजल है जिसमें उन्होंने पूरी जिंदगी का फलसफा बयान कर दिया है, उनका एक शेर यूं है- जिंदगी से बड़ी सजा ही नहीं। और क्या जुर्म है पता ही नहीं।

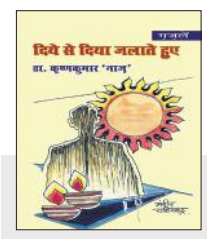

पुस्तक - दिये से दिया जलाते हुए
लेखक- डॉ. कृष्णकुमार 'नाज'
प्रकाशक - गुंजन प्रकाशन, मुरादाबाद।
मूल्य- रु0 200/
समीक्षक - इंजी. राशिद हुसैन

सामाजिक परिवेश को बड़ी खूबसूरती से अपने शेरों में कह देने का हुनर रखने वाले जनाब कृष्णबिहारी 'नूर' की अदब की रोशनी की किरण जब मुरादाबाद पर पड़ी तो एक नाम सामने आया- डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज' जिनकी लेखनी पर नाज किया जा सकता है। कृष्ण कुमार 'नाज' का जन्म मुरादाबाद से चंद मील दूर कुरी रवाना गांव में हुआ। उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए जब वह शहर आए तो मुरादाबाद के होकर रह गए। हाल ही में उनका ताजा गजल-संग्रह 'दिये से दिया जलाते हुए' का विमोचन हुआ जिसका मैं भी साक्षी बना। आज के समय में जब रिश्तों में मुहब्बत की कमी हो गई है,तब नाज साहब ने रिश्ते निभाने के लिए समर्पण को अहमियत दी है। वो कहते हैं-सिमट जाते हैं मेरे पांव खुद ही,मैं जब रिश्तों की चादर तानता हूं। उससे हार के खुद को बेहतर पाता हूं,लेकिन जीत के शर्मिंदा हो जाता हूं।

आज इक्कीसवीं सदी में थोड़ा सा पैसा किसी के पास आ जाए तो उसके पैर जमीन पर नहीं पड़ते। ऐसे मगरूर के लिए लिखते हैं-सरफिरी आंधी का थोड़ा-सा सहारा क्या मिला,धूल को इंसान के सर तक उछलना आ गया। नाज साहब का यह गजल संग्रह पूरा जहान समेटे हुए है। यह समाज के हर पहलू को बड़ी खूबसूरती से उकेरते हुए एक मुकम्मल किताब लगती है। इसको पढ़कर ऐसा महसूस होता है कि इसे बार-बार पढ़ा जाए।

किताबें पढ़ने का कम होता चलन

अनूप शुक्ल
कानपुर

पिछले दिनों कई किताबें खरीदीं। पुरानी जो खरीद लिस्ट में थीं वो और नई जिनके बारे में पता चला। एक के बाद एक किताबें आई। उनको खोला गया। उल्टा-पलटा गया। कुछ को आधा-अधूरा पढ़ा भी गया। फिर रख दिया गया तसल्ली से पढ़ने के लिए। तसल्ली से पढ़े जाने के इंतजार में तमाम किताबें अधपढ़ी,अनपढ़ी हैं। इनमें से कई क्लासिक की श्रेणी में आती हैं। उनको पढ़ने के मौके का इंतजार करते हुए न जाने कितने दिन,महीने और साल भी बीत जाते है,लेकिन लगता है कि तसल्ली से पढ़ लेंगे।

पिछले दिनों जबलपुर से तमाम किताबें ले आए। परसाई पर केंद्रित कांतिकुमार जैन के संस्मरण 'तुम्हारा परसाई' पहले पढ़ चुके थे,लेकिन वहां दिखी तो खरीद ली। इसके अलावा परसाई जी की जीवनी 'काल के कपाल पर हस्ताक्षर', ज्ञानरंजन जी की कई किताबें,उनको लिखे पत्रों के संकलन जिनका संपादन प्रियंवद जी ने किया है। स्वदेश दीपक जी की किताब 'जिन मांडू नहीं देखा' और दीगर किताबों के अलावा और कई किताबें खरीदीं। किताबें खरीदते समय भी एहसास होता है कि पता नहीं इनको कब पढ़ पाएंगे,पहले की भी किताबें पढ़नी हैं,लेकिन जब किताब सामने दिखती है तो लगता है खरीद ही लो। पता नहीं बाद में मिले न मिले।

किताब पढ़ने वाले सभी लोगों के साथ लगभग ऐसा ही होता होगा। अपने पास कभी किताबें नहीं मिलती थीं, अब किताबें ही किताबें हैं,लेकिन उनको पढ़ना नहीं हो पाता। सोशल मीडिया पर चे गवारा की 'मोटर साइकिल डायरी' फिल्म का जिक्र पढ़ा। फिल्म खोजी तो मिली नहीं। फिर सोचा किताब भी तो है। किताब ही ली जाए। आर्डर करने बैठे तो एक के बाद एक कई किताबें आर्डर कर दीं। इस बार जो किताबें आर्डर की उनमें सबसे पहले आई गिरिजा कुलश्रेष्ठ जी की कहानियों की किताब 'नदी झूठ नहीं बोलती' बच्चों के लिए लिखी छोटी-छोटी कहानियां। पहले भी गिरिजा जी ने अपनी दो किताबें भेजी थीं। घर बदलने के क्रम में वे किताबों के बक्से में ही रह गईं। अब नए घर में खुलेगा बक्सा तब पढ़ी जाएंगी किताबें।

प्रमोद सिंह जी की किताब 'बेहयाई के बहत्तर दिन।' प्रमोद जी की किताब में चीन के किस्से हैं। प्रमोद जी आसानी से समझ में आने वाली बात को अच्छी लिखाई मानने से परहेज टाइप करते हैं। उसकी झलक उनके लिखाई में भी दिखती है। 'बेहयाई के बहत्तर दिन' के साथ आई चे गवारा की किताब 'मोटर साइकिल डायरी'। इसकी भूमिका चे गवारा की बिटिया ने लिखी है। हमारी हम उम्र है। किताब में नक्शा बना है चे ग्वारा के मोटर साइकिल टूर का। मन किया लेटिन अमेरिका जाएं और किसी की मोटर साइकल मय ड्राइवर किराए पर लें और वह रास्ता तय करें जिस रास्ते चे ग्वारा गए थे।

दूसरी खेप में आई शिवमूर्ति जी की किताब 'अगम बहै दरियाव'। किताब का परिचय लिखा है-'आपातकाल से लेकर उदारीकरण के बाद तक करीब चार दशकों में फैली ऐसी दस्तावेजी और करुण महागाथा जिसमें किसान जीवन अपनी संपूर्णता में सामने आता है। किताब की कई लोगों ने तारीफ की थी।

आज जब पढ़ना शुरू किया तो लगा कि पढ़ते रहें तो हफ्ते भर में पढ़ लेंगे। देखते हैं पिछले दिनों असगर वजाहत की किताब 'उम्र भर सफर में रहा' पढ़ी। इसके अलावा नीरजा चौधरी जी की किताब 'हाऊ प्राइम मिनिस्टर्स डिसाइड' का पहला अध्याय पढ़ा था। इसमें इंदिरा गांधी जी द्वारा आपातकाल लगाने से लेकर हटाने तक के किस्से विस्तार से बताए गए हैं। दूसरे प्रधानमंत्रियों के किस्से पढ़ने हैं अभी। नीरजा जी की किताब का जिक्र अखबार में या कहीं और पढ़ा था। इसके बाद पुण्य प्रसून बाजपेयी जी की किताब लाइब्रेरी में रखी दिखी। उसई समय सोचा था कि यह किताब लेनी है। संयोग से रिटायरमेंट के समय दफ्तर के साथियों ने भेंट देने के लिए किताबों की पसंद पूछी तो हमने यह किताब और दूसरी मार्खेज की 'लव इन द टाइम ऑफ कॉलेरा' बताई थी। साथियों ने खोजकर किताब हमको विदाई समारोह में भेंट की। लव इन द टाइम ऑफ कॉलेरा पहले भी कहीं से डाउनलोड की थी,लेकिन पढ़ नहीं पाए थे।

रिटायरमेंट के मौके पर तमाम उपहारों के साथ किताबें खूब मिलीं। निरुपमा दीदी ने बहुत पहले ही रघुवीर सहाय रचनावली देने की लिए कहा था। वह मिली। इसके अलावा और भी कई मित्रों ने कई किताबें भेंट कीं। इन किताबों में रामचरित मानस, गीता की भी कई प्रतियां हैं। एक मित्र ने जावेद अख्तर की जीवनी जादूनामा भेंट की। बहुत बढ़िया आर्ट पेपर में छपी किताब है। हमने किताब का हर कोना छान मारा उसमें कहीं भेंट देने वाले का नाम नहीं लिखा। पता चलता तो स्पेशल धन्यवाद देते।

हमारे घर में हमको सबसे कीमती चीजें किताबें लगती हैं। पढ़ भले न पाए,लेकिन लगता है कि हैं तो पास में। कभी न कभी पढ़ ही लेंगे। आज किताबें पढ़ने का चलन कम होता जा रहा है तब कोशिश करें कि किताबें पढ़ते रहें और उनकी चर्चा करते रहें। इससे पढ़ने का चलन कुछ तो बनेगा।

कैसे जानें डायबिटीज है या नहीं...

किसी व्यक्ति को डायबिटीज है अथवा नहीं,यह जानने का सबसे अच्छा तरीका यही होता है कि यह देखा जाए कि उसके खून में शर्करा का स्तर (बल्ड सुगर लेवल) कितना है। यह बात खून के विभिन्न परीक्षणों से जानी जाती है। कुछ हद तक यह बात मूत्र के परीक्षण से भी जानी जाती है,क्योंकि खून में ग्लूकोज के एक स्तर (180 एमजी प्रतिशत) के बाद ग्लूकोज यूरिन में निकलने लगता है और तब यूरिन की जांच के बाद इस बात का अंदाज लगाया जा सकता है। खून में ग्लूकोज का स्तर विभिन्न अवस्थाओं में और विभिन्न प्रकार से जाना जाता है।

डॉ.राजीव अग्रवाल
तिलहर, शाहजहांपुर

खाली पेट रक्त शर्करा – रात भर खाना न खाने के बाद सुबह खाली पेट खून में शुगर की मात्रा की जांच करना।

भरे पेट रक्त शर्करा – खून में ग्लूकोज का यह स्तर सुबह खाली पेट के बाद भरपेट भोजन करने के दो घंटे बाद नापा जाता है।

कभी भी नापी गई रक्त शर्करा– इसमें रक्त शर्करा नापने के लिए भोजन के समय का कोई विशेष ध्यान नहीं रखा जाता है।

ओरल ग्लूकोज टॉलरेंस टेस्ट– इसमें रात भर भूखे रहने के बाद सुबह खाली पेट बल्ड शुगर नापी जाती है। फिर 75 ग्राम ग्लूकोज पानी में घोलकर पिलाने के 1, 1.5, 2 और 3 घंटे बाद खून में शक्कर की मात्रा देखी जाती है।

मूत्र की जांच और ऊपर की सारी खून की जांचें घर पर भी की जा सकती हैं।

ए1सी या एचबी ए1सीटेस्ट (ग्लाइकेटेड या ग्लाइकोसिलेटेड हीमोग्लोबिन टेस्ट) –इस जांच में हमारे खून की लाल रक्त कोशिकाओं में स्थित हीमोग्लोबिन से जुड़े हुए ग्लूकोज की मात्रा नापी जाती है। यह पिछले दो-तीन महीने का औसत बल्ड शुगर लेवल बताती है। यह जांच हमारे घर पर नहीं की जा सकती है। यह पैथालॉजी लैब में ही की जा सकती है।

गर्भावधि मधुमेह परीक्षण– गर्भावस्था में एफबीएस, आरबीएस और पीपीबीएस टेस्ट किए जाते हैं। इनमें से किसी के बढ़े होने पर ओरल ग्लूकोज टॉलरेंस टेस्ट किया जाता है।

शुगर लेवल की जांच टाइप 1– सामान्य बल्ड शुगर लेवल टेस्ट के अतिरिक्त इसमें ऑटोमेटिमेब ऑटोएंटीबॉडी की जांच भी की जाती है। यह जानने के लिए कि कहीं हमारा शरीर ऊर्जा पैदा करने के लिए ग्लूकोज के स्थान पर वसाओं (फैट्स) का इस्तेमाल तो नहीं कर रहा या कहीं कीटोएसिडोसिस तो नहीं हो रही है। इसमें यूरिन में केटोन्स की मात्रा देखी जाती है।

टाइप 2 डायबिटीज – इसकी जांच करने के लिए वही सब सामान्य जांचें की जाती हैं, जो ऊपर बताई गई हैं।

डायबिटीज का प्रबंधन/उपचार

हमारे शरीर में ग्लूकोज का स्तर ठीक रहे,इसके लिए हम निम्न मोटी-मोटी बातों पर ध्यान दे सकते हैं...

- उचित भोजन
- शारीरिक व्यायाम
- शरीर का सही वजन
- धूम्रपान और शराब आदि से बचना
- शारीरिक और मानसिक तनाव-रहित जीवन
- कुछ प्राकृतिक दवाएं, वनस्पतियां और योग।

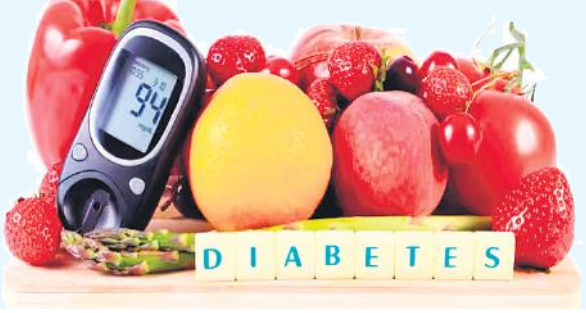

डायबिटीज के प्रबंधन में इसको होने से रोकने और इसका असर कम करने में मुख्यतः हमारी जीवनचर्या को नियमित, संतुलित तथा व्यवस्थित करना व दवाएं आती हैं। इसकी जटिलताओं के विशेष उपचार होते हैं जिनमें शल्य चिकित्सा भी आती है। डायबिटीज के उपचार में दवाओं की भूमिका तभी है जब किसी को डायबिटीज़ हो जाए और उसकी मात्रा एक स्तर से अधिक बढ़ जाए अन्यथा इसकी रोकथाम के लिए सही जीवनशैली ही महत्वपूर्ण है।

दूसरी बात यह है कि डायबिटीज के उपचार के लिए बहुत सारी मुंह से खाने वाली दवाएं आती हैं, अनेक प्रकार की इंसुलिन के इंजेक्शन्स आते हैं और इन्सुलिन के पैच और इम्प्लांट भी आते हैं। आजकल नैनो टेक्नोलॉजी अर्थात् अत्यंत सूक्ष्म यंत्रों से भी इसका उपचार होता है। इस नैनो टेक्नोलॉजी में रक्त में भेजे जाने वाले सूक्ष्म रोबोट्स भी आते हैं,लेकिन यह उपचार अभी प्रायोगिक स्तर पर ही है। जेनेटिक इंजीनियरिंग और स्टेम सेल टेक्नोलॉजी से भी इसका उपचार होता है। कभी-कभी इसमें पैंक्रियाज का ट्रांसप्लांटेशन भी किया जाता है,लेकिन इन दवाओं, शल्य चिकित्साओं, उपचार की अन्य विधियों और डायबिटीज की जटिलताओं के उपचारों जिसमें अनेक विशेषज्ञों की भूमिका होती है के लिए हमें योग्य चिकित्सकों पर ही निर्भर होना चाहिए। इनके लिए आम जनता को स्वयं निर्णय नहीं लेने चाहिए। यह इस विधा के विशेषज्ञों का क्षेत्र है। आम जनता केवल अपनी जीवनशैली पर ही ध्यान दे सकती है। अतः मैं यहां केवल सही जीवनशैली के विषय पर ही जाऊंगा।

खाना खजाना

डोसा सैंडविच

आपने कई तरह के सैंडविच बनाए और खाए होंगे। आज हम आपको एक नए तरीके का सैंडविच बनाने की रेसिपी बता रहे हैं। वीकेंड पर आपके परिवार के लिए निश्चित ही ये नया सैंडविच एक नया स्वाद और नया अनुभव देगा। आइए जाने डोसा सैंडविच की रेसिपी।

मनीष कुमार सोलंकी

सामग्री

- 6 ब्राउन ब्रेड स्लाइस
- 2 बड़ा चम्मच हंग कर्ड (पानी निकाला हुआ दही)
- 2 बड़ा चम्मच मैश किया पनीर
- 1 बड़ा चम्मच बारीक कटा हरा धनिया
- 1/4 छोटा चम्मच कुटी काली मिर्च
- 1 कप रेडीमेड इंस्टेंट डोसा मिक्स पाउडर
- 2 छोटे चम्मच रिफाइंड तेल
- स्वादानुसार नमक

बनाने की विधि इंस्टेंट डोसा मिक्स पाउडर को पैकेट पर लिखे निर्देशानुसार घोल लें। एक बाउल में हंग कर्ड, पनीर, धनिया, काली मिर्च और नमक मिलाकर अच्छी तरह भरावन तैयार कर लें। ब्रेड के किनारे काट लें। एक ब्रेड की स्लाइस पर थोड़ा भरावन रखकर अच्छी तरह फैलाएं और दूसरी ब्रेड के स्लाइस से ढक दें। सभी ब्रेड को इसी तरह तैयार करें। इसके बाद धीमी आंच में एक नॉन स्टिक तवा रखें और इसमें हल्का सा तेल डालकर चिकना कर लें। डोसा घोल में प्रत्येक स्टफ्ड ब्रेड को डिपकर दोनों तरफ सुनहरा होने तक सेंक लें। डोसा सैंडविच तैयार है इसे चटनी और सॉस के साथ गर्मागर्म सर्व करें।

अतिथि देवो भव की मिसाल है कुटी गांव

भूपेश कन्नौजिया, हल्द्वानी

प्राकृतिक सौंदर्य से सराबोर धारचूला के व्यास वैली का खूबसूरत गांव कुटी समुद्र तल से करीब 12500 फिट की ऊंचाई पर स्थित है। यह भारत का अंतिम गांव है और आदि कैलाश की यात्रा पर जाते वक्त इस गांव में रात्रि विश्राम करना अपने आप में बेहद रोमांचकारी है। चौतरफा पहाड़ी से घिरे गांव के बीच समतल खेत और आंखों को सुकून देने वाले मनोहारी दृश्य आपकी यात्रा की थकान को चंद मिनटों में ही काफूर कर देते हैं। इस गांव से ही 16 किमी का रास्ता तय करते हुए आप ज्योलिंगकांग होते हुए आदि कैलाश पहुंचते हैं,जहां आपको गौरीकुंड और पार्वती सरोवर के दर्शन होते हैं।

करीब 300 लोगों की आबादी वाला यह गांव आज भी सुविधाओं से वंचित है,मगर मजाल कि लोगों को किसी प्रकार का कोई मलाल हो। ग्रामीणों ने अपने पुराने मकानों को अब होम स्टे में बदल दिया है, मगर उनके साथ कोई छेड़छाड़ नहीं की गई है न ही किसी प्रकार की कोई लग्जरी दी गई है। एक ही कमरे में करीब छह लोगों की जमीन पर सोने की व्यवस्था होती है,जहां ठंड से निपटने के लिए गर्म रजाई और गद्दे आपको दिए जाते हैं। घरों के खिड़की और दरवाजों पर की गई कलाकारी मन मोह लेती है। सर्दियों में अत्यधिक बर्फ के कारण ज्यादातर लोग धारचूला या अन्य गर्म जगहों में चले जाते हैं।

लोग बेहद मिलनसार होते हैं और पर्यटकों का हृदय से स्वागत करते हैं। सबसे खास बात है कि ये लोग हमेशा अपने चेहरे में मुस्कान लिए रहते हैं,जिसे देखते हुए यात्री अपनी कठिन यात्रा की सारी थकान भूल जाते हैं। वहीं रहने खाने-पीने की व्यवस्था लाजवाब होती है,जो आपको किसी अति दुर्गम इलाके में होने का अहसास तक नहीं कराती। लोकल सब्जी-मसाले और जड़ी-बूटियों से लैस खाने का स्वाद आप ताउम्र याद रखेंगे।

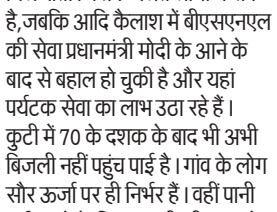

ऐसे पड़ा गांव का नाम कुटी

स्थानीय निवासी हरीश सिंह कुटियाल बताते हैं कि कुटी का इतिहास द्वापर युग के पांडवों से जुड़ा है। पांडव जब स्वर्गारोहण के लिए गए थे तो इसी गांव में लंबा प्रवास किया था। यह गांव उनकी माता कुंती को भा गया था जिसके चलते कालांतर में इसका नाम कुटी पड़ा। यहां पर पांडवों ने जिस स्थान पर अपना निवास बनाया वह समतल मैदान से लगभग पांच मीटर ऊंचा है। इस स्थान पर पांडवों के बैठने के लिए बिछाए गए पत्थर आज भी विद्यमान हैं और महिलाओं का यहां जाना मना है। यहां पर पांडव पर्वत हैं जिसमें पांच चोटियां हैं,जिन्हें पांच पांडवों का प्रतीक माना जाता है।

बुनियादी सुविधाओं का अभाव

कुटी में जिओ का टॉवर है,पर लोगों को सुचारू रूप से इसकी सेवा नहीं मिल पाती जिसके चलते लोगों में रोष है,जबकि आदि कैलाश में बीएसएनएल की सेवा प्रधानमंत्री मोदी के आने के बाद से बहाल हो चुकी है और यहां पर्यटक सेवा का लाभ उठा रहे हैं। कुटी में 70 के दशक के बाद भी अभी बिजली नहीं पहुंच पाई है। गांव के लोग सौर ऊर्जा पर ही निर्भर हैं। वहीं पानी गर्म करने के लिए लकड़ी की आग से चलने वाले गीजर लोगों के लिए वरदान साबित हो रहे हैं।

गांव के कुंवर सिंह कुटियाल बताते हैं कि सीमांत के गांवों और अग्रिम चौकियों तक बिजली पहुंचाने लिए यूपीसीएल की टीम सर्वे कर चुकी है। सीमांत के गांव बिजली नहीं होने के कारण सोलर उर्जा पर निर्भर हैं। मौसम के खराब होने से अक्सर ग्रामीणों को दिक्कत होती है। बिजली पहुंचने के बाद राहत मिलेगी। चीन सीमा से सटे गांवों और आईटीबीपी की अग्रिम चौकियों तक बिजली पहुंचाने के लिए निविदा प्रक्रिया शुरू होने की बात कही गई थी और मार्च से काम शुरू होने की उम्मीद थी,पर अभी तक कार्य शुरू नहीं हो पाया है। केंद्र सरकार ने धारचूला के गुंजी गांव को पहले ही वाइब्रेंट विलेज योजना में शामिल कर लिया है अब उम्मीद है कि जल्द गांव में बिजली पहुंच पाएगी। वहीं उन्होंने बताया कि गांव में एक छोटा चिकित्सा केंद्र भी नहीं है जिसके चलते लोगों को धारचूला ही आना होता है।

क्या है उच्च कार्यशील अवसाद

उच्च कार्यशील अवसाद (हाई फंक्शनिंग डिप्रेशन) इन दिनों काफी चर्चा में है। यह एक छुपा हुआ मानसिक अवसाद है जिसमें व्यक्ति अवसाद की स्थिति में होने के बावजूद भी अपनी रोजमर्रा के जीवन में सामान्य और सही तरीके से ही काम करता है,लेकिन फिर भी वह भीतर ही भीतर अवसाद के लक्षणों से जूझता है। ऐसे में उच्च कार्यशील अवसाद को पहचानना काफी मुश्किल हो जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) के अनुसार दुनिया भर में लगभग 28 करोड़ लोग डिप्रेशन से पीड़ित हैं जिसमें पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या ज्यादा है।

डॉ. अर्चना श्रीवास्तव
चिकित्सक, लखनऊ

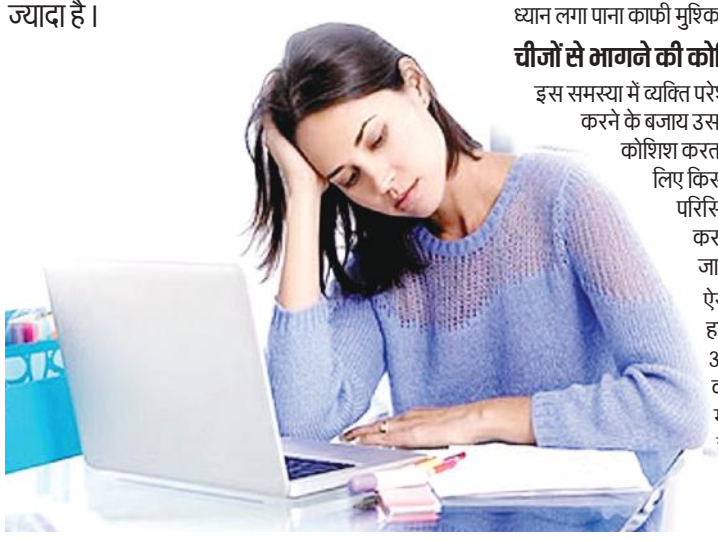

अवसाद के लक्षण

खुद पर विश्वास न होना
ऐसे में व्यक्ति आत्मविश्वास खोने लगता है। उसे खुद पर शक होने लगता है। साथ ही फैसले लेने में भी परेशानी होती है।

लोगों से दूरी बनाना
हाई फंक्शनिंग डिप्रेशन में व्यक्ति अकेले रहना ज्यादा पसंद करता है। उसके लिए लोगों के बीच रहना या उनसे संपर्क करना मुश्किल हो जाता है।

अपनी भावनाओं को छिपाना
अगर आप बाहरी रूप से अपनी भावनाओं को छिपाने की कोशिश करते हैं तो यह भी हाई फंक्शनिंग डिप्रेशन का लक्षण हो सकता है।

ध्यान केंद्रित करने में परेशानी होना
इस समस्या में आपको हर चीज में ध्यान देने में परेशानी होगी। ऐसे में किसी भी चीज पर ध्यान लगा पाना काफी मुश्किल हो सकता है।

चीजों से भागने की कोशिश करना
इस समस्या में व्यक्ति परेशानी का सामना करने के बजाय उससे भागने की कोशिश करता है। उसके लिए किसी भी मुश्किल परिस्थिति का सामना करना मुश्किल हो जाता है। ऐसे व्यक्ति को हमेशा थकान और ऊर्जा की कमी महसूस होती है। लगातार अपने आप की आलोचना करना। उच्च कार्यशील अवसाद का निदान या मान्यता प्राप्त उपचार अभी तक उपलब्ध नहीं है, इसे पहचानना बहुत चुनौतीपूर्ण हो सकता है। क्योंकि इससे पीड़ित लोग 'उत्पादक' बने रहने और अपने लक्षणों को छिपाने के लिए चरम सीमा तक जा सकते हैं।

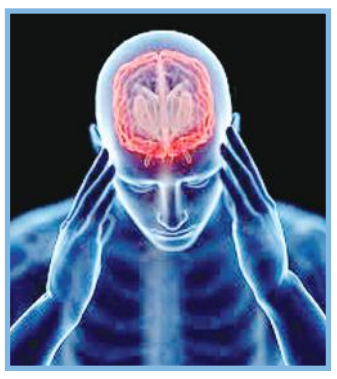

जीवनशैली में बदलाव
नियमित व्यायाम, संतुलित आहार, पर्याप्त नींद और तनाव प्रबंधन तकनीकें, सभी बेहतर मूड और समग्र स्वास्थ्य में योगदान दे सकती हैं।

सहायता नेटवर्क
मित्रों, परिवार या सहायता समूहों का एक मजबूत सहायता नेटवर्क बनाने से अमूल्य भावनात्मक समर्थन और प्रोत्साहन मिल सकता है।

स्व-देखभाल के अभ्यास
ऐसे क्रियाकलापों में संलग्न होना,जो आनंद और विश्राम प्रदान करते हैं, जैसे शौक, रचनात्मक गतिविधियां या प्रकृति में समय व्यतीत करना। हाई फंक्शनिंग डिप्रेशन के लक्षणों को कम करने में मदद कर सकते हैं।

साप्ताहिक राशिफल

-पं.मनोज कुमार द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, कानपुर

मेष इस सप्ताह के आरंभ में आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि और भाग्य का सहयोग प्राप्त होने के प्रबल संकेत प्राप्त हो रहे हैं। सप्ताह मध्य में छुट्टियों से वापस आकर आप कार्यक्षेत्र के कार्यों को बेहतर रूप से करने में सफल रहेंगे।

वृष इस सप्ताह की शुरुआत आपके प्रसन्नता और कार्यसिद्धि के लिए शुभ नहीं है। आपको कुछ स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां हो सकती हैं। आपके परिवार में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। सप्ताह के मध्य की अवधि आपका पारिवारिक जीवन और पिता के साथ संबंधों के लिए अनुकूल रहेगा।

मिथुन इस सप्ताह की शुरुआत में आपका वैवाहिक जीवन के आनंद प्रेम वृद्धि पारिवारिक वातावरण परिवार में आपसी सद्भाव आपसी लगाव और पारिवारिक शांति में सुधार होगा। किंतु सप्ताह के मध्य में आपको कुछ मानसिक अशांति के कारण हताशा और निराशा का अनुभव भी होगा। आपको अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा।

कर्क इस सप्ताह के आरंभ में बढ़ते हुए खर्च आपकी चिंता बढ़ाएंगे। आप सभी मुद्दों का समाधान निकालने में सफल रहेंगे तथा किसी मनपसंद स्थान की यात्रा पर जाने से आपका मन खुश रहेगा। आपके वैवाहिक जीवन के आनंद के लिए उत्कृष्ट रहेगा। सप्ताह के अंतिम भाग में आपको कुछ निराशा का अनुभव होगा।

सिंह इस सप्ताह की शुरुआत में आप एक बहुत अच्छे सलाहकार के रूप में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित करेंगे और आपके बच्चे आपके लिए कोई अच्छी खबर ला सकते हैं। भावनात्मक संबंधों के लिए यह समय अच्छा रहेगा। आपकी कल्पना शक्ति के मजबूत होने से आप में नए विचारों का जन्म होगा।

कन्या इस सप्ताह की शुरुआत का समय आपकी मां और जीवनसाथी के मध्य अच्छा सामंजस्य रहने के संकेत दे रहा है। आपका जीवनसाथी सभी घरेलू मामलों को सुलझाने संबंधित अच्छी योजनाएं बनाएगा। इससे आपके परिवार की प्रगति होगी और घर में शांति रहेगी। सप्ताह के मध्य भाग में आपके साझेदार आपके लिए सक्षम साबित होंगे।

तुला इस सप्ताह के आरंभ का समय सामाजिक गतिविधियों और व्यापारिक गतिविधियों के लिए उत्कृष्ट रहेगा। आपकी कुशलता और प्रबंधन की छिपी क्षमता की लोक सराहना करेंगे। आपका पूरा समर्थन और स्नेह आपके रिश्तेदारों दोस्तों और भाई बहनों के साथ रहेगा।

वृश्चिक इस सप्ताह के आरंभ में अचानक से वित्तीय लाभ, परिवार में सामंजस्य, लाभ, कार्य क्षेत्र में प्रगति के साथ-साथ खुशी आत्मविश्वास और भाग्य का पक्ष मजबूत रहेगा। सप्ताह का मध्य भाग सामाजिक गतिविधियों के लिए शुभ प्रतीत हो रहा है,लेकिन अपेक्षित उत्साह और आत्मविश्वास की आप में कमी रहेगी।

धनु इस सप्ताह की शुरुआत आपके व्यक्तित्व विकास, प्रतिरक्षा और स्वास्थ्य की बेहतरी के लिए अत्यंत शुभ साबित होगी। आपका उत्साह इस समय उच्च स्तर पर रहेगा और आप अपने कौशल और व्यक्तित्व विकास को बेहतर करने के लिए धन खर्च करेंगे। आपके आत्मविश्वास और कार्य कुशलता में सुधार होगा।

मकर इस सप्ताह के आरंभ में कार्यों के मध्य अवांछित अवरोध आने के कारण कार्य सिद्ध नहीं हो पाएंगे। इससे आप में निराशा हताशा की स्थिति रहेगी फिर भी इस समय में यात्राओं पर जाना आपके लिए लाभकारी रहेगा। ऐसा संकेत भी मिल रहा है कि आप विश्वास के साथ मामलों को निपटा लेंगे।

कुंभ इस सप्ताह की शुरुआत में आपकी आय और व्यवसाय में वृद्धि होगी। सरकार के समर्थन से आय क्षेत्र में स्थिर लाभ की उम्मीद कर सकते हैं। सप्ताह के मध्य में आप पर अधिक मानसिक तनाव व अनावश्यक निराशा और हताशा की स्थिति रहने से महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि में बाधाएं आएंगी।

मीन इस सप्ताह के आरंभ में आपके कार्यों में प्रगति के संकेत बना रहे हैं। आप अधिकारियों और कार्य स्थल पर सहयोगियों से सहयोग की उम्मीद कर सकते हैं। वर्तमान ग्रह स्थिति में व्यापार नौकरी के विकास के अवसर प्राप्त करने के लिए आपको वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग लेने की कोशिश करनी होगी।

वर्ग पहेली (काकुरो)

काकुरो पहेली वर्ग पहेली के समान हैं, लेकिन अक्षरों के बजाय बोर्ड अंकों (1 से 9 तक) से भरा है। निर्दिष्ट संख्याओं के योग के लिए बोर्ड के वर्गों को इन अंकों से भरना होगा। आपको दी गई राशि प्राप्त करने के लिए एक ही अंक का एक से अधिक बार उपयोग करने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक काकुरो पहेली का एक अनूठा समाधान है।

काकुरो 88

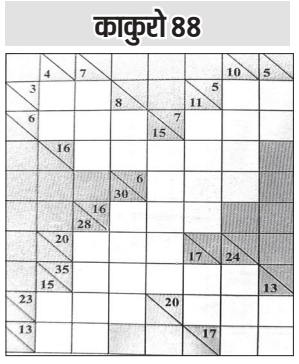

काकुरो 87 का हल

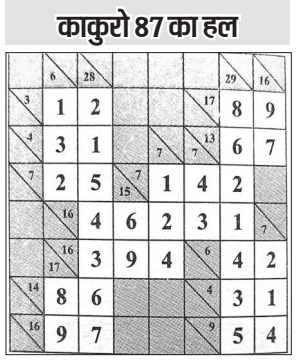

जो दिल की राह से गुजरी है वो बहार हो तुम

ध्रुव गुप्त
सेवानिवृत्त आईपीएस

हिंदी फिल्मों की शुरुआती तीन महानायिकाओ में नरगिस और मधुबाला के अलावा एक नाम सुरैया का भी रहा है। तब उनके प्रति लोगों की जैसी दीवानगी थी वह किसी परीकथा से कम नहीं लगती। एक अभिनेत्री के तौर पर सुरैया में नया और अलग कुछ नहीं था। सीधे-सादे अभिनय के बावजूद पर्दे पर उनकी शालीन उपस्थिति, ग्लैमर और मीडिया द्वारा बनाए गए रहस्यमय आभामंडल की वजह से लोग उनकी फिल्मों तक खिंचे चले आते थे।

अभिनेत्री से बेहतर वे एक गायिका थीं। उनकी आवाज की खनक, गहराई और भंगिमाएं सुनने वालों को एक दूसरी दुनिया में ले जाती है। लता जी के उत्कर्ष के पूर्व सुरैया ने ही हिंदी सिनेमा के गीतों को गरिमा और ऊंचाई दी। नौशाद ने उन्हें पहचाना और तराशा तथा गुलाम मोहम्मद ने फिल्म 'मिर्जा ग़ालिब' में उन्हें हुनर का शिखर दिया। इस फिल्म में सुरैया की गायिकी से प्रभावित पंडित नेहरू ने कहा था - तुमने मिर्जा ग़ालिब की रूह को जिंदा कर दिया है। सुरैया की दिलफरेब आवाज के आज भी लाखों दीवाने हैं।

सुरैया अपनी अधूरी और त्रासद प्रेमकथा के कारण भी मेरे दिल के बहुत करीब रही हैं। शुरुआती हिन्दी सिनेमा वैसे तो दर्जनों प्रेम कथाओं के कारण जाना जाता है,लेकिन लोगों की संवेदना को ऐसी प्रेम कहानियां ज्यादा छूती हैं,जो किसी अंजाम तक नहीं पहुंचती। हिंदी सिनेमा की कुछ असफल प्रेमकथाओं में सर्वाधिक दुखद अंत सुरैया और देव आनंद के प्रेम का हुआ था। उस प्रेम के टूट जाने के बाद देव आनंद ने अपनी एक अलग दुनिया भी बसाई और कई विवाहेतर प्रेम भी किए,लेकिन उनसे अलग हो जाने के बाद सुरैया आजीवन अविवाहित रही और विगत प्रेम में ही जीती रही।

मरी भी तो उसे ही सीने से लगाकर। उनकी जिंदगी में झांककर देखिए तो वह प्रेम की अधूरी, असमाप्त कविता की तरह बेचैन करती है। उनकी जैसी प्रेम की एकनिष्ठता जीवन में तो क्या, किस्सों और कहानियों में भी कम ही मिलती है।

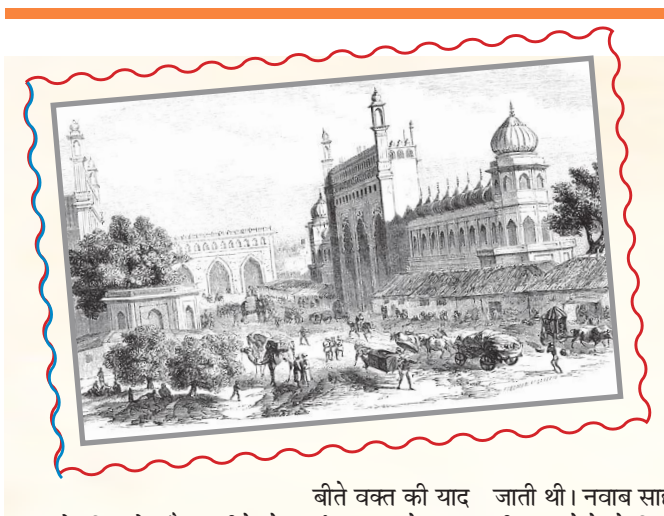

कोई नजीर हो, कोई किस्सा या महज चंद लफ्जों में कही गई कोई बात। मजमून की नजाकत, नफासत कहने की अदा यह बता देती है कि बात अवध सूबे की राजधानी लखनऊ से वाबस्ता है। गुजिश्ता वक्त में अपनी तहजीब के हवाले से लखनऊ ने ऊंचा मकाम हासिल किया था। उस वक्त की तमाम यादें जितनी इतिहास के पन्नों में दर्ज हैं उतनी ही तमाम बाशिंदों के जेहन में कैद हैं।

इतिहास में दर्ज लखनऊ की यादें

बीते वक्त की याद लफ्जों, किस्सों और सलीके के मार्फत शहर के कुछ हिस्सों में आज भी हिचकियां लेती मिल जाती हैं। लाखन पासी के नाम से अपनी पहचान हासिल करने वाला यह शहर कुछ मायनों में शेषनाग के फन की तरह स्थिर है तो कई मायनों में उनके अवतार की तरह उग्र हो उठता है।

डॉ. नीलिमा पांडेय
प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय

इस शहर में एक जमाने में तमाम बाग हुआ करते थे। उनमें से एक पसंद बाग कहलाता था। तारीख के पन्नों पर इस बाग के दामन में जिन खैरख्वाहों के सितारे टके हैं उनके नाम नसीरुद्दीन हैदर, राजा गालिब जंग और धनिया महरी हैं। हैदर साहब अवध के बादशाहों की कड़ी में दूसरे थे। उनकी बादशाहत में ही बाग बना। देखभाल का जिम्मा गालिब जंग के पास था और साज-सज्जा धनिया महरी संभालती थी।

गुलशन वही जो गुलों से आबाद हो जिसकी फिजा में बहार की रंगत घुली हुई हो। पसंद बाग सही मायने में गुलशन था। यहां बड़ी मेहनत और मशक्कत के साथ विलायती फूल खिलाए जाते थे, रंगीन पानी के फुहारे चलते थे। खास बात यह कि पानी में रंग तो होता ही था रंग से मेल खाती खुशबू भी शामिल रहती थी। मसलन केसर, केवड़ा, खस। खुश-आब-ओ-हवा के माहौल में पूरी फिजा जन्नत जैसी दिखती थी। पसंद बाग में सावन के दिनों में सालाना मेला लगा करता था जिसका सिलसिला 5 दिनों तक चलता था। इस मेले में शान-ओ-शौकत और रुआब रखने वाले लोग भी शामिल होते थे। उनकी खिदमतम के लिए नफासत की तालीम लिए खूबसूरत और खुशमिजाज मालिनो की व्यवस्था रहती। मालिने इस मेले की रौनक हुआ करती थीं। उन्हें तमीज और सलीके की बाकायदा तालीम दी जाती थी। नवाब साहब की बेगमें और उनके रिश्तेदार भी इस मेले में शिरकत करते थे। संदर्भ मिलते हैं बेगमात पकवानों और श्रृंगार-पिटार से लक-दक आती थीं। साथ लाए पकवान मिल-बांटकर खाए जाते। सावन के गीतों के बीच झूलों पर पेंग बढ़ाई जाती। खुशनुमा रंगत में पांच दिन यूं गुजरते गोया जन्नत की सैर हो।

वक्त ढलने के साथ-साथ नवाबियत का रंग फीका पड़ा और साथ में पसंद बाग भी बेनूर होता गया। बाद के दिनों में यह मिर्जा हुमायूं को हासिल रहा जो टीपू सुल्तान के रिश्ते में थे। बादशाह अमजद अली शाह की पोती उनसे ब्याही थी। इस वजह से वह यहां बस गए थे। गुजरते वक्त के साथ धीरे-धीरे पसंद बाग के नक्श-ओ-निशान मिटते गए। कुछ दीवारें उन पर बने हुए कंगूरे, बावली, झरोखेदार परकोटे जरूर लंबे अरसे तक बने रहे। बाद में इस बाग को सुप्रसिद्ध गायिका बेगम अख्तर ने खरीद लिया था। बाग उन्हें खास पसंद था। दम भर इस गुलशन को रोशन रखने की कोशिश भी रही उनकी। हालांकि बाग को नवाबी रंगत देने में उनको कामयाबी नहीं मिली। आज की तारीख में जब हम वहां जाते हैं तो बेगम अपनी मां के साथ पुर-सुकून सोई मिलती हैं। बेगम से राब्ता हो तो उनकी गुनगुनाहट को भी वहां आप महसूस करेंगे।

"उल्टी हो गईं सब तदबीरें कुछ न दवा ने काम किया
देखा इस बीमारी-ए-दिल ने आखिर काम तमाम किया"। मीर साहब की इस गजल को बेगम अख्तर ने अपने नायाब अंदाज में गाया है। मीर-तकी-मीर, बेगम अख्तर और पसंद बाग तीनों का अंतिम ठौर लखनऊ ही है।

दारोगा धनिया महरी

पसंद बाग की साज-सज्जा संभालने वाली धनिया महरी सिर्फ नाम की ही महरी थी। शाही दरबार में उनका रुतबा कहीं अधिक था। साथ ही वह जनानखाने के दारोगा की हैसियत से नियुक्त थीं। सरकार-ए-अवध की तरफ से उनको अफजलउन्नीसा का खिताब हासिल था और 14 पारचों की खिलअत दरबार से अता फरमाई गई थी। अपनी चाक-चौबंद नजरों के साथ वह दारोगाई का परचम लहराती तूफानी अंदाज में महल में डोला करती थीं। बादशाह की सरपरस्ती ऐसी की बड़े से बड़े ओहदेदार खानम-खानम की लय बांधे आदाब बजाया करते थे। जाहिर है यह रुतबा हासिल करने के लिए धनिया महरी ने तमाम पसीना बहाया होगा।

धनिया ने अपनी बहन डोली के साथ शाही महल में चाकरी शुरू की। राजनीतिक मसलों पर नजर और समझ रखने की वजह से धीरे-धीरे धनिया का कद ऊंचा उठता गया और डोली पीछे छूट गई। बादशाह का हुक्का थामें उनके साथ चलना धनिया का शुरुआती काम था। हुक्का थामे-थामे धीरे-धीरे वह जनानखाने की निगहबान बन गई। बादशाह नसीरुद्दीन हैदर उसकी बुद्धि का कायल हो उससे सलाह मशविरे करने लगे। सियासी मामलों में जरूरत भर धनिया महरी का दखल हो गया। कुल मिलाकर वह बादशाह के खास कारिंदे की हैसियत रखने लगी।

तस्वीर :प्रतीकात्मक। धनिया महरी की एक तस्वीर उत्तर-प्रदेश के राज्य संग्रहालय में देखी जा सकती है। तस्वीर में वह बादशाह का हुक्का थामे चल रही हैं।

लखनऊ में रहने वाले लोगों के लिए धनिया महरी एक जाना-पहचाना नाम है। उन्हें धनिया महरी के पुल के बारे में पता रहता है। पुल बनने का किस्सा यूं है कि एक दफे किसी पैदाइश के जलसे में बादशाह मुबारकें और इकरार लुटा रहे थे। धनिया महरी की बारी आने पर उसने बुद्धेश्वर मंदिर के रास्ते में एक पुल बनाने की ख्वाहिश जाहिर की। बुद्धेश्वर महादेव का एक शिवाला है। वहां सावन में यहां लगने वाली भीड़भाड़ को पास में बहते नाले के उफनने से दिक्कत होती थी। आवाम की तकलीफ के हक में ख्वाहिश जाहिर कर धनिया ने बादशाह को अपना मुरीद ही बना लिया। नसरुद्दीन हैदर ने फौरन से पेश्तर बुद्धेश्वर मंदिर के रास्ते में पुल बनवा दिया। पुल को धनिया महरी के नाम से ही आज भी जाना जाता है। पुल के अलावा धनिया महरी के नाम का एक इमामबाड़ा और मस्जिद भी शहर में मौजूद थे। इन्हें धनिया ने अपनी जाती रकम खर्च कर बनवाया था। इमामबाड़ा तो सन् 1957 में तहस-नहस हुआ। मस्जिद बची है। मौलवी गंज में उसे आज भी देखा जा सकता है। शतरंज की बिसात के प्यादे भी कभी-कभी बाजी मात करवा देते हैं। कहते हैं बादशाह नसीरुद्दीन की मौत जहर खाने से हुई। तारीख सन् 1837 की 7 जुलाई थी। खैरख्वाह की मौत का इल्जाम धनिया महरी के सर आया। दलील ये कि बीती रात बादशाह को शर्बत का गिलास धनिया ने पेश किया था। सच-झूठ का राज तो फाश हुआ नहीं। हां वक्त ने पहलू बदला तो धनिया महरी से लखनऊ जरूर छूट गया। चर्चा है कि अगले बादशाह मोहम्मद शाह ने फरमान जारी कर धनिया को लखनऊ से बाहर कर दिया। बाद के दिनों में उसके कानपुर में बसने की चर्चा मिलती है।

इतिहास के झरोखे से

पंचाल राज्य का गौरवशाली इतिहास

प्रो. गिरिराज नन्दन
इतिहासकार, आंवला, बरेली

काम्पिल्य

काम्पिल दीर्घकाल तक कला और साहित्य का केन्द्र बना रहा। इस समय इस स्थान की दशा शोचनीय है और अनेक प्राचीन स्मारक नष्ट होते रहे हैं जिनके उचित संरक्षण की ओर ध्यान देना आवश्यक है।

जैन तीर्थ काम्पिल्य- 13 वें तीर्थंकर, वराहलांछन विमलनाथ के गर्भ एवं जन्म की पवित्र भूमि और प्राचीन दक्षिण-पंचाल जनपद की राजधानी, महानगरी काम्पिल्य की पहचान प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले की कायमगंज तहसील में, कायमगंज रेलवे स्टेशन से लगभग 8 कि.मी. की दूरी पर, पक्की सड़क के किनारे स्थित वर्तमान काम्पिल नामक बस्ती से की जाती है। गंगा की एक पुरानी धारा बस्ती के पास से बहती थी। जैन अनुश्रुतियों के अनुसार काम्पिल्य या कम्थिला भी भारत की अत्यंत प्राचीन नगरियों में से है। भगवान ऋषभदेव का विहार यहां हुआ करता था, तथा जब ऋषभपुत्र बाहुबलि ने मुनिदीक्षा ली थी तो उन्हीं के साथ उनके सहवर काम्पिल्य के राजकुमार ने भी दीक्षा ले ली थी।

इस महानगरी में भगवान ऋषभपुत्र के वंशज महाराज कृतवर्मा की महादेवी जयश्यामा ने माघ शुक्ल चतुर्थी के दिन तीर्थंकर विमलनाथ (विमलवाहन) को जन्म दिया था। राज्यभोग के उपरांत उन्होंने नगर के निकटवर्ती वन में जाकर दीक्षा ली एवं तप किया। केवल ज्ञान प्राप्त किया और तदनंतर अपने उपदेश द्वारा कल्याण किया। कालांतर में इसी नगर में हरिषेण नाम का चक्रवर्ती सम्राट हुआ जिसकी जननी भी परम जिनभक्त आदर्श श्रविका थी। महाभारत काल में पांचाल नरेश द्रुपद इस नगर का राजा था। कहीं-कहीं द्रुपद की राजधानी का नाम माकंदी लिखा है, संभव है कि यह कम्पिला का ही अपर नाम रहा हो। द्रुपददुहिता द्रौपदी हस्तिनापुर के कुरुवंशी पंच पांडवों की पत्नी थी, उसकी गणना आदर्श सतियों में की जाती है। भगवान पार्श्वनाथ और महावीर का आगमन भी कम्पिला में हुआ था। एक जनश्रुति के अनुसार ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती भी इसी नगर में हुआ था। जैन पुराणों एवं कथाग्रंथों में कम्पिला के धर्मवीरों, धनकुबेरों एवं मनीषियों के अनेक प्रसंग मिलते हैं।

वर्तमान में यहां एक पर्याप्त प्राचीन दिगम्बर जैन मन्दिर विद्यमान है जिसमें श्यामल मूंगिया पाषाण की पुरुषाकार पद्मासनस्थ प्रतिमा भगवान विमलनाथ की मूलनायक के पद पर विराजमान है। यह प्रतिमा लगभग सत्तरह-अट्ठारह सौ वर्ष प्राचीन है ऐसा अनुमान किया जाता है और जमीन में दबी मिली थी। जहां से संयोग से उसका उद्घाटन हुआ। प्रतिमा बड़ी मनोज्ञ एवं अतिशयपूर्ण है। आसपास के खंडहरों, गंगा के खादर व टीलों आदि से अन्य भी कई खंडित-अखंडित जिन प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं। मंदिर में और भी कई मनोज्ञ प्रतिमाएं है। एक अच्छी धर्मशाला भी है। तीर्थ का प्रबंध एक तीर्थक्षेत्र कमेटी करती है। यहां द्रुपद टीले के निकट एक पुराना श्वेतांबर मंदिर भी दर्शनीय है। मध्यकाल में भी अनेक जैन यात्री कम्पिला जी के दर्शनार्थ आते रहे और इसी कारण इस प्राचीन महानगरी की स्थिति, स्मृति आदि सुरक्षित रही। इस क्षेत्र पर प्रतिवर्ष चैत्रवदी 15 के चैत्रसूदी 4 तक, पांच दिन का जैन मेला रथोत्सवावि होते हैं और आश्विन वदी 2 से 4 तक भी एक मेला होता है। दक्षिण पंचाल की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध काम्पिल्य नगर धर्म का प्रमुख केन्द्र था। काम्पिल्य नगर के नामकरण के संबंध में भी जैनियों का धार्मिक दृष्टिकोण जुड़ा हुआ है। काम्पिल्य नगर का एक अन्य नाम 'पंचकाल्याणक' भी मिलता है। इस क्षेत्र के यह नाम जैनियों के तेरहवें तीर्थंकर विमलनाथ के जीवन की पांच कल्याणकारी घटनाओं-अवतरण, आबास, अभिषेक, उपगति एवं जिनत्व से जुड़े होने के कारण प्राप्त हुआ बताया गया है। जैन साहित्य में काम्पिल्य नगर की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई है और उसको अत्यंत समृद्धिशाली नगर कहा गया है। काम्पिल्य नगर के शासक सृजय ने राजपद का परित्याग कर जैन धर्म अंगीकार कर लिया था। इससे यह संकेत मिलता है कि जैन धर्म को जहां एक ओर पंचाल शासकों का आश्रय प्राप्त था। वहीं दूसरी ओर पंचाल शासक भी जैन धर्म की शिक्षाओं से अत्यंत प्रभावित थे।

जैन धर्म के प्रचार प्रसंग में रत अनेक आचार्यों का काम्पिल्य नगर से गहरा संबंध था। एक परंपरा के अनुसार जैन संत गर्धावलि ने काम्पिल्य नगर में संसार का परित्याग कर मुक्ति प्राप्त की थी। प्रस्तिचंपा के राजा गागली ने काम्पिल्य नगर में ही जैन धर्म अपनाया था।

कालिका देवी मंदिर की शोभा हैं गौड़ जमींदारों के नगाड़े

कानपुर गजेटियर के मुताबिक कानपुर में गौर क्षत्रियों का आगमन इंदौर के निकट गढ़ गजनी अथवा गढ़ गंजना अथवा नारनोल से हुआ। कान्यकुब्जाधिपति जयचन्द्र की कन्या से पृथ्वीदेव का विवाह हुआ और कालपी व कड़ा की जागीर दहेज में मिली। पृथ्वीदेव रहनियापुर (अकबरपुर तहसील) अथवा कसरूखेड़ा के मेव राजा की कन्या का अपहरण किया तो मेवो ने पृथ्वीदेव व उनके साथियों ने छल से मार डाला। पृथ्वीदेव की मेव रानी ने ब्राह्मण और कन्नौजी रानी ने एक चमार के यहां शरण ली। गर्भिणी कन्नौजी रानी ने शरण के दौरान पटहरदेव का जन्म दिया और यह शाखा चमरगौड़ों की कहलाई। पटहरदेव ने मेवों को हराकर पिता की मृत्यु का बदला लिया और छीने गए गांव पुत्रों को दे दिए। भाटकदेव को मकरंदपुर समेत 42 गांव, डुडनदेव को बनीपारा समेत 24 गांव, बच्छराज को नार समेत 24 गांव, बाजनदेव को नरिहा, रसिकदेव को झीझंक समेत 24 गांव, बुलार सिंह को गहलौ समेत 24 गांव और रोशनदेव को अकबरपुर तहसील का बरहापुर की जागीर मिली। पटहरदेव का ही उल्लेख हरदेव के रूप में मिलता है।

अनूप कुमार शुक्ल
महासचिव इतिहास समिति, कानपुर

पटहरदेव के पांचवे पुत्र रसिकदेव या रसिकचन्द्र के पुत्र विजय सिंह (बिम्बदेव) ने खानपुर डिलवल की शाखा स्थापित की थी। इसी वंश में केसरी सिंह हुए जिनके ज्येष्ठ पुत्र मोहकम सिंह के चार पुत्र किन्नर सिंह, गुमान सिंह, भाऊ सिंह व चन्दी सिंह हुए। किन्नर सिंह को राजा दरियावचन्द्र (सन् 1857 के गांव इनाम की तहसीलदारी 1868 में कानपुर रेल दुर्घटना में प्राणांत हो गया पुत्र ज्ञान सिंह, पहलवान सिंह हुए। ज्ञान सिंह प्रसिद्ध जमीदार व आनरेरी मजिस्ट्रेट भी रहे। ज्ञान सिंह के पुत्र गोविन्द सिंह के पुत्र धर्मपाल सिंह हुए। खुमान सिंह के तीन पुत्र शिवबख्श सिंह, शोभा सिंह व गोकुल सिंह हुए। पहलवान सिंह के पौत्र गंगा सिंह हुए। मोहकम सिंह के दूसरे पुत्र गुमानसिंह के तीन पुत्र रूप सिंह, शिवदयाल सिंह व दुर्गा सिंह हुए। उनके तीसरे पुत्र भाऊ सिंह निःसंतान रहे और चौथे पुत्र चंदी सिंह के पौत्र राजेन्द्र बहादुर सिंह रहे। (कानपुर का इतिहास - सन् 1950 ई.) ठाकुर करन सिंह राठौर 1700 ई. में ग्राम जोंता (जि. फर्रूखाबाद) से औरंगजेब के शासन से परेशान होकर इटावा जिले में आए और शकूरपुरा में रिश्तेदारी के सिलसिले में बस गए। यहां से फिर 1857 ई. की क्रांति से पूर्व लखना में आकर बसे। 1857 ई. में ठा. सुघर सिंह व मचल सिंह लखना में बसे। कुछ दिनों के बाद ही 1857 की क्रांति प्रारंभ हो गई। अतः राव जसवंत सिंह के साथ हो गए। प्रारंभ में राव जसवंत सिंह, राजा निरंजन सिंह तथा सुघर सिंह आदि ने खुब लूट की, ये कानपुर तक हाथ मारते थे। खानपुर (जि. कानपुर) से लूटे हुए नगाड़े जो कालका देवी मंदिर में रखे हैं, इस बात की पुष्टि करते हैं। जसवंत सिंह बहुत चालाक व्यक्ति थे जब उन्होंने देखा कि अंग्रेज अधिक शक्तिशाली है तो क्रांतिकारियों का साथ छोड़कर अंग्रेजों से मिल गए और कलेक्टर ह्यूम जब आगरा से इटावा लौटकर आए तो उनसे अपने साथियों की चुगली करके उनकी दुर्गति कराई जिससे उन्हें क्रांति के पश्चात सितारेहिंद की उपाधि तथा 20 हजार रुपये सालाना की नानकार मिली। मचल सिंह और सुघर सिंह यद्यपि राजा निरंजन सिंह के रिश्तेदार थे फिर भी उन्हें विवश हो जसवंत सिंह के साथ रहना पड़ा। सुघर सिंह के पन्ती राजनरायन सिंह लखना टाउन एरिया लगातार चेयरमैन रहे। (इटावा जनपद के हजार साल - 1950 ई.) खानपुर, कानपुर के गौड़ जमीनदारों के यहां से लूटे गए नगाड़े लखना (औरैया, इटावा) की भगवती कालिका देवी मंदिर की शोभा बने हैं।

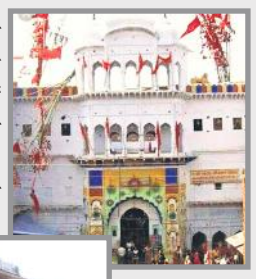

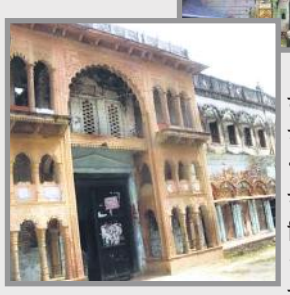

सानौधा दुर्ग और गडरमल मंदिर बडोह

विदिशा जिले के ग्राम बडोह एवं पठारी में प्राचीन अवशेषों की बहुतायत है। ग्वालियर स्टेट के आर्कियोलॉजिकल डिपार्टमेंट की एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट्स में यह हमने पढ़ा था, सो इनकी तलाश में हम इन गांवों की ओर चल पड़े। ग्राम बडोह के विभिन्न मंदिरों में गड़रमल मंदिर सबसे विशाल है। यह मंदिर ज्ञाननाथ की पहाड़ी पर निर्मित है। मूल रूप से यह हिन्दू मंदिर है,जिसे तोड़ दिया गया था। इसका जीर्णोद्धार ग्वालियर राज्य के आर्कियोलॉजिकल डिपार्टमेंट द्वारा कराया गया। नवीं सदी में निर्मित यह मंदिर 101 फीट ऊंचा है। यह मंदिर सात अन्य मंदिरों मध्य में स्थित है जिनके अवशेष ही अब देखने को मिलते है। इस मंदिर को लेकर एक किंवदंती है कि इस मंदिर का निर्माण एक गड़रिया समाज के व्यक्ति द्वारा कराया गया। कहा जाता है कि एक बार यह गड़रिया अपनी बकरियां ज्ञाननाथ पहाड़ी पर चराने ले गया था। उसने संत ज्ञाननाथ की बकरियों को बिना रखवाले के यहां विचरण करते पाया। दिनभर इन बकरियों की देखभाल करने बाद उसने बकरियों को संत के यहां पहुंचा दिया। संत ने उससे प्रसन्न होकर एक मुट्ठी भर जौ के दाने दिए, किंतु उसने गुस्से में आकर यह दाने संत के निवास के बाहर चट्टान पर फेंक दिए। गड़रिये की पत्नी को यह पता लगा तो तत्काल वह कंबल लेकर चली,किंतु आश्चर्यचकित! स्त्री ने कंबल से ढके उपालो कोसोने के रूप में पाया। गड़रिये ने जौ के दाने फेंकने के स्थान को जाकर देखा वह चट्टान स्वर्ण की हो गई। इस प्रकार धन संपन्न गड़रिया ने उन संत के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए एक विशाल मंदिर और तालाब का निर्माण कराया। इस तालाब में पानी आने को लेकर भी एक कहावत है। तालाब खोदने के बाद भी जब उसमें पानी नहीं आया, तब उस गड़रिया ने तालाब में पानी भरने के लिए आपने दो पुत्रों, पुत्रवधू एवं पौत्र की बलि दी तब तालाब पानी से लबालब हो गया। इस विशाल और बेहद खूबसूरत मंदिर समूह को मुगल आक्रांताओं ने विदिशा पर आक्रमण के दौरान तोड़ दिया। ध्वस्त होने के बाद भी इस मंदिर का शिखर आज भी आसमान से बाते करते हुए नजर आता है। मंदिर परिसर में तमाम पुरातत्व सामग्री बहुत दूर-दूर तक फैली है।

रूपेश उपाध्याय
अपर-कलेक्टर, सागर

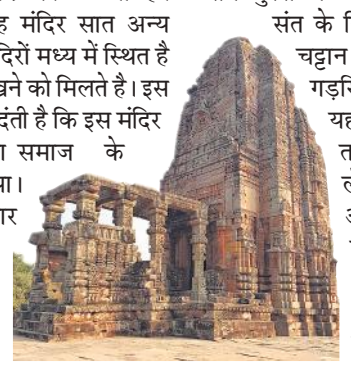

सानौधा दुर्ग- सानौधा सागर दमोह मार्ग पर एक गांव है जिस पर सन् 1818 ई में मेजर लेम्ब ने अपने अधिकार में ले लिया था। यहां एक किला है जिसका उपयोग सन् 1857 ई. में विद्रोहियों ने विदेशी शासन के विरुद्ध लड़ाई करते समय अपनी सामग्री संग्रहीत करने के लिए किया था। बाद में कैप्टन हारे ने हैदराबाद की सैनिक टुकड़ी की सहायता से इस पर कब्जा कर इसे गिरा दिया था। एक फ्रांसीसी यात्री लुई रौजिलेट ने 20 अप्रैल सन् 1824 ई. को इस स्थान की यात्रा की थी। इसका अच्छा वर्णन किया है। यह किला मूलतः गोंड राजाओं का निर्माण है।

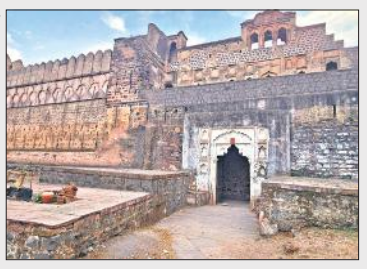

जहांगीर का दीवान-ए-आम

बादशाह ने ईश्वरीय अवतार की परिकल्पना की आलोचना करते हुए इसका कारण अज्ञानता का होना बताया था। उनके इस विश्वास और अवतार को अस्वीकार करने के सिद्धांत को इस्लामी कट्टरपन से जोड़कर नहीं देखा जा सकता।

जहांगीर का विष्णु के अन्य रूपों से कोई मतभेद नहीं था। अपने सिद्धांतों और अवतार के रूप को अस्वीकार करने के बावजूद बादशाह विष्णु को पूज्य भगवान का रूप मानते थे। उनकी असहमति इस बात से थी कि हिंदुओं के इस भगवान को उस आकार में प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है,जो इस्लाम में अस्वीकार्य है। वास्तव में वह स्वयं अपनी आंखों से पुष्कर के इस देवालय की मूर्तियों को देखने गए थे,जो उनके एक राजपूत दरबारी राना शंकर का मंदिर था। इसलिए केवल उसकी संदर्भित मूर्तियों को नष्ट करने का आदेश दिया गया था, न कि इन प्रतिमाओं को खंडित करने का कोई सामान्य आदेश कभी भी उनके राज में दिया गया। सन् 1613 के उसी वर्ष में और संभवतः उसी समय अजमेर के रायसिंह दालान की संस्तुति पर जहांगीर ने पुष्कर गांव के ब्राह्मणों को मदद-ए-माशा देने का ऐलान किया था।

जहांगीर ने कई महत्वपूर्ण हिन्दू धार्मिक स्थलों का भ्रमण किया और वृंदावन के मान सिंह द्वारा बनवाए गए मंदिर के विषय में वर्णन भी किया। उन्होंने हरिद्वार तथा कश्मीर के ऊंचे मंदिरों की भी चर्चा की है। जब वह कांगड़ा के रास्ते में थे तब उन्होंने हरिद्वार के विषय में जो लिखा था वह इस प्रकार था, "... उसी महीने की सातवीं तारीख को हरिद्वार में गंगा नदी के किनारे पड़ाव पड़ा। यह हिंदुओं के प्रसिद्ध तीर्थ स्थानों में से एक है। बहुत से ब्राह्मण तथा साधु यहां अपने लिए एकांत स्थान बनाकर धर्म के नियम अनुसार ईश्वर का पूजन करते हैं। हमने सभी को उनकी आवश्यकतानुसार धन तथा सामान दिया।"

कांगड़ा के विवादास्पद प्रकरण के विषय में भी एक स्पष्टीकरण दिया जाता है। कहते हैं कि कांगड़ा विजय के बाद जहांगीर ने किले का भ्रमण किया। उन्होंने काजी मीर और उलेमा को भी अपने साथ लिया। किले के अंदर पहुंचने के बाद बादशाह ने आदेश दिया कि इस्लाम के नजरिए से जो भी व्यवस्था और परंपरा हो,वैसा किया जाए। इसके अनुपालन में प्रार्थना हुई,खुतबा पढ़ा गया और एक लोमड़ी का वध किया गया। जहांगीर का कहना था कि जब से यह किला बना था ऐसा कभी नहीं हुआ था। जहांगीर का एतराज वहां मौजूद दुर्गा भवानी की काले पत्थर से बनी पवित्र मूर्ति पर भी था,क्योंकि उनकी जानकारी के अनुसार इस जगह पर लगी हुई मूल मूर्ति को पूर्व में किसी मुस्लिम विजेता द्वारा नदी में फेंक दिया गया था,परंतु उन्होंने न तो मंदिर को नष्ट किया और न ही ज्वालामुखी के काले पत्थर को हाथ लगाया था। उनका कहना था कि वास्तव में बड़ी संख्या में मुस्लिम इस मंदिर में आया करते थे और काले पत्थर के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त किया करते थे। विद्वानों के अनुसार इस प्रकरण में भी बादशाह जहांगीर किसी हिन्दू को अपमानित करने की कोशिश करता हुआ नहीं दिखता।

सलीम से जहांगीर एक शहजादे से बादशाह तक का सफर-कैसी थी दिनचर्या, यात्रा और मुलाकात की व्यवस्था,आश्चर्य की बात है कि वृहद रूप से लिखी गई आत्मकथा 'तुजुक-ए-जहांगीरी' में बादशाह ने अपनी दिनचर्या के बारे में कोई भी विवरण उपलब्ध नहीं कराया,परंतु उनकी यात्राओं के विवरण खूब मिलते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि सामान्य स्थिति में अकबर द्वारा नियत दिनचर्या ही इस बादशाह की भी दिनचर्या बन गई थी।

बादशाह जहांगीर नियमित रूप से झरोखा दर्शन दिया करते थे,यहां तक कि बीमार होने पर भी उनकी इस गतिविधि में कोई बाधा उत्पन्न नहीं हुआ करती थी। इतिहासकार डिलायट लिखते हैं कि सूर्योदय के समय प्रतिदिन बादशाह स्वयं सूर्य को प्रणाम करने के लिए उपस्थित होते थे। इस अवसर पर सामंत लोग बादशाह के अभिनंदन के लिए एकत्रित होते तथा सामान्य लोग मैदान में खड़े हुआ करते थे। तत्पश्चात 'बादशाह सलामत' का घोषकर सभी लोग उनका अभिनंदन करते थे। ऐसे अवसर पर उच्चतम पदाधिकारियों की शिकायतें भी बादशाह से की जा सकती थीं। बादशाह जहांगीर तथा जन सामान्य के बीच सीधे संपर्क स्थापित करने की यह प्रथा लाभदायक सिद्ध हुई। जहांगीर कभी-कभी इस अवसर पर मनसबदारों की सेना का अवलोकन भी किया करते थे। राज्य के कार्यों की देखभाल के लिए बादशाह जहांगीर दीवान-ए-खास और दीवान-ए-आम में नियत समय पर उपस्थित रहा करते थे। इस स्थान पर जहां एक बड़ा हॉल हुआ करता था, बादशाह जहांगीर दिन में तीन बार उपस्थित होते थे। वहां कोई भी व्यक्ति फरियाद कर सकता था। इसके विपरीत तथ्य बताते हैं कि बादशाह अकबर दोपहर के बाद ही दीवान-ए-आम में आया करते थे, परंतु जहांगीर ने इस अवधि को बढ़ा दिया था। डिलायट लिखता है कि प्रातः कालीन दरबार की तरह इस समय भी सामान्य आदमी बादशाह तक पहुंच सकता था।

दीवान-ए-आम में पशुओं का प्रदर्शन,नवीन मनसबों को प्रदान किया जाना, विदेशी दूतों से भेंट, युद्ध में बंदी बनाए गए लोगों के प्रति कार्यवाही आदि कृत्य संपन्न किए जाते थे। अपनी आत्मकथा में बादशाह जहांगीर ने पालतू बनाए जाने के लिए पकड़े गए अकबरी तथा जहांगीरी हाथियों से भी श्रेष्ठ किस्म के हाथियों के निरीक्षण की बात लिखी है। दीवान-ए-आम में शाहजादा खुर्रम द्वारा खरीदे गए घोड़ों तथा हाथियों को जहांगीर के समक्ष उपस्थित होने तथा नौकरों द्वारा पशुओं के स्वस्थ होने संबंधी जांच कराई गई,ऐसी जानकारी तत्कालीन ऐतिहासिक स्रोतों में मिलती है।

दक्षिण के लिए अपने सैन्य अभियान हेतु प्रस्थान करने से पूर्व दीवान-ए-आम में ही खुर्रम को शाहजहां की उपाधि से विभूषित किया गया था। प्रतिष्ठित मेहमानों, राजदूतों तथा अन्य देशों के शासकों का स्वागत सर्वप्रथम सार्वजनिक दरबार में ही किए जाने की परंपरा थी। बाद में यदि आवश्यकता होती थी तो उन्हें व्यक्तिगत कक्षों में आमंत्रित किया जाता था। बादशाह का वजीर विभिन्न प्रांतों से प्रेषित की गई रिपोर्टों को दीवान-ए-आम में ही पढ़कर सुनाया करता था।

राजगोपाल सिंह वर्मा
वरिष्ठ लेखक, आगरा